

महाभाव-कल्लोलिनी

(श्रीराधा-जन्म-महोत्सवपर प्रकाशित पद-पुस्तिका)

प्रकाशक—
श्रीराधामाधव सेवा संस्थान,
पो० गीतावाटिका, गोरखपुर

तृतीय संस्करण—२०००
श्रीराधाष्टमी-महोत्सव, सं० २०३३

न्योछावर—एक रुपया चालीस पैसे

मुद्रक—
संस्थान प्रेस, रेलवे सर्कुलर रोड, गोरखपुर

नम्र निवेदन

भगवती श्रीराधाजीका प्राकट्य-महोत्सव कोई नयी वस्तु नहीं है। पाँच हजार वर्ष पूर्व जब उनका धराधामपर अवतरण हुआ था, तभीसे प्रतिवर्ष यह महोत्सव मनाया जाता रहा है। शास्त्रोंमें इसकी स्पष्ट आज्ञा है। 'पद्मपुराण'में स्पष्ट शब्दोंमें प्रतिवर्ष महोत्सव मनानेका आदेश है तथा उसका महान् फल बतलाया गया है--

प्रत्यब्दमेव कुरुते राधाजन्ममहोत्सवम्।

(पद्मपुराण, उत्तर, अ० १६३)

अवश्य ही श्रीराधाजीका सम्बन्ध लौकिक लीलासे कम रहा और भगवान्की आनन्दस्वरूपा निजशक्ति होनेके कारण उनके आनन्द-विधानसे ही विशेष सम्बन्ध रहा; अतः स्वाभाविक ही जैसे भगवान् श्रीकृष्णकी विभिन्न रूपोंमें तथा भावोंसे सर्वत्र पूजा-उपासना हुई, उनका प्राकट्य-महोत्सव जैसे सर्वत्र मनाया जाने लगा, वैसे श्रीराधाजीका नहीं मनाया गया। परंतु भगवत्प्रेमके उच्चतम साधन-राज्यमें तो श्रीराधाजीके दिव्य आदर्शको सामने रखनेकी परम अनिवार्य आवश्यकता है ही। विश्वजगत्के मानव-प्राणीके लिये भी पारस्परिक प्रेमकी वृद्धिके हेतु जिस त्यागकी आवश्यकता है और जिसके बिना प्रेम केवल मोहका पर्यायवाची बना रहता है, वह त्याग श्रीराधाजीके परम त्यागमय जीवनको ही आदर्श मानकर चलनेसे शीघ्र सिद्ध हो सकता है। इसके लिये श्रीराधाजीके दिव्य प्रेमका, दिव्य भावोंका, उनके महान् त्यागका, उनकी दिव्य जीवनचर्याका और उनके स्वरूपतत्त्वका स्मरण परम आवश्यक है और इसी महान् उद्देश्यको लेकर हमारे परम श्रद्धेय नित्यलीलालीन श्रीभाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार एवं परम पूज्य श्रीराधाबाबाने लगभग ३२ वर्ष पूर्व प्राचीन-परम्परागत श्रीराधा-

जन्म-महोत्सवको देशभरमें व्यापक रूप देने, उनकी महान् शिक्षाका प्रचार-प्रसार करके उसके द्वारा क्षुद्र 'स्व'की सेवामें लगे हुए तथा पशुता एवं असुरताकी ओर जाते हुए अधोगामी मनुष्यको ऊपर उठाकर उसको वास्तविक मानव बनाने तथा साधनाके उच्च स्तरपर पहुँचानेके लिये इस आयोजनका एक महोत्सवके रूपमें प्रारम्भ किया था। अपने निवासस्थान गीतावाटिका (गोरखपुर) में परमश्रद्धेय श्रीभाईजी इस उत्सवको बड़ी ही भव्यता एवं उल्लासके साथ मनाते थे। श्रीमहोत्सवके समय परमश्रद्धेय श्रीभाईजी एवं पूज्य श्रीबाबाके भावपूर्ण मुख-मण्डलका दर्शन उपस्थित अपार जनसमुदायमें भावका प्रवाह बहा देता था। भगवान् श्रीराधामाधवकी कृपासे इस आयोजनमें उत्तरोत्तर सफलता प्राप्त होती गयी और यह आयोजन साधनाके एक विशाल बोधिवृक्षके रूपमें परिणत हो गया। इतना ही नहीं, यहाँके महोत्सवसे प्रेरणा ग्रहणकर तथा 'कल्याण'में प्रकाशित इन महोत्सवोंपर दिये गये परम श्रद्धेय श्रीभाईजीके अनुभूतिपूर्ण, सारगर्भित प्रवचनोंसे प्रभावित होकर भावुक भक्त देशके कोने-कोनेमें श्रीराधारानीका यह प्राकट्य-उत्सव मनाने लगे हैं। इसकी व्यापकता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। परिणामस्वरूप श्रीराधारानी तथा श्रीगोपाङ्गनाओंके सम्बन्धमें फैले हुए मोहजनित दुर्भावोंका नाश होकर उनके परमोच्च दिव्यजीवनकी झाँकी भी कहीं-कहीं होने लगी है। आध्यात्मिक जगत् परमश्रद्धेय श्रीभाईजी एवं पूज्य श्रीबाबाके इस परम पावन प्रयासके प्रति सदा ऋणी रहेगा।

श्रीराधाजीके सम्बन्धमें बड़ा भ्रम फैला हुआ था और लोग उन्हें भोग-जगत्की ही कल्पना मानने लगे थे। वास्तवमें श्रीराधाजीके जीवनका दिव्य स्वरूप अत्यन्त पवित्र तथा परम पावन है। हमारे परमश्रद्धेय श्रीभाईजीका मन श्रीराधाजीके जिस स्वरूपको देख पाया था, उसकी बड़ी स्थूल तथा संक्षिप्त झाँकी वे इन शब्दोंमें कराया करते थे—

मेरी उन राधाके शुचितम प्रेमराज्यमें नहीं प्रवेश।
काम-भोगका मलिन, कभी भी किंचित् नहीं कल्पना-लेश॥
राग-रहित शृङ्गार अनूठा, मोह-रहित है पावन प्रेम।
सुख-वाञ्छा-विरहित ममता है, पूर्ण समर्पित योग-क्षेम॥
स्वाद रहित सब खान-पान है, है अभिमान-रहित अति मान।
भोग-बहुलता भोग-रहित नित, प्रियतम-सुखकी शुचितम खान॥
इन्द्रिय-तन-मन-प्राण-अहं-मति हैं प्रियतमके लिये तमाम।
नहीं कार्य कुछ निजका उनसे, करते सब प्रियतमका काम॥
संयमपूर्ण सहज ही होते जगमें जगके सब व्यवहार।
नहीं किसीसे उनका मतलब, प्रियतम-सुख ही केवल सार॥
मेरी ऐसी हैं वे राधा त्रिभुवन-पावनि जीवन-साध्य।
नित्य-तृप्त श्रीमाधवकी जो हैं पवित्रतम परमाराध्य॥

'मेरी उन श्रीराधाके पवित्रतम प्रेमराज्यमें मलिन काम-भोगका किसी कालमें किंचित् भी प्रवेश तो है ही नहीं, उसकी लेशमात्र कल्पना भी नहीं है। उनमें (केवल प्रियतम श्रीकृष्णके सुखके हेतु) राग-रहित शृङ्गार है, मोह-रहित सबको पवित्र करनेवाला प्रेम है, निज-सुखकी इच्छासे सर्वथा रहित ममता है और योगक्षेम तो पूर्ण समर्पित है (प्रियतमका योगक्षेम ही राधाका योगक्षेम है), स्वाद-रहित सब खान-पान है, अभिमानसे रहित (प्रियतम-सुखदायी) अतिमान है। अपने भोगकी इच्छासे रहित केवल नित्य प्रियतमकी सुख-सेवाके लिये भोग-बाहुल्य है—यानी वे भी प्रियतमके पवित्र सुखकी ही खान हैं। राधाके इन्द्रिय, शरीर, मन, प्राण, बुद्धि, अहंकार—सब केवल प्रियतमकी सेवाके लिये ही हैं। उनसे इनका अपना कोई काम नहीं है। ये सब सदा प्रियतमका ही कार्य करते रहते हैं। इन राधाजीके जगत्में जगत्के सारे व्यवहार सहज ही संयमपूर्ण होते हैं, किसी अन्यसे उनका कोई मतलब ही नहीं है। प्रियतमका सुख ही एकमात्र सार वस्तु है। मेरी वे जीवनकी साध्यस्वरूपा त्रिभुवनपावनी श्रीराधा इस

प्रकारके गुण-स्वरूपशाली हैं, और नित्य तृप्त श्रीमाधवकी पवित्रतम परमाराध्या हैं।'

श्रीराधाजीके इस संक्षिप्त स्वरूपका विस्तार करके देखिये—वह कितना विशाल, कितना महान्, कितना पवित्रतम, कितना पावन, कितना उच्चतम साधनका आदर्श और कितना लोककल्याणकारी है। श्रीराधामाधवकी कृपासे हमलोग उनके जीवनके यथार्थ स्वरूपकी किंचित्सी दिव्य झाँकी प्राप्त कर सकें—यही उनके श्रीचरणोंमें प्रार्थना है और इसलिये यह महोत्सव मनाया जा रहा है।

महोत्सवकी मधुरता तथा श्रीराधाजीकी पवित्र स्मृतिके लिये इस पद-पुस्तिकामें कुछ पदोंका संग्रह प्रकाशित किया जा रहा है। इनमें अधिकांश पद परमश्रद्धेय श्रीभाईजीद्वारा इस आयोजनके निमित्त ही रचित हैं और कुछ प्राचीन भी हैं। इनमें कुछ पद ऐसे भी हैं, जिनका जन्म-महोत्सवके अवसर पर ही नही, अन्य समय भी गान-कीर्तन किया जा सकता है। श्रीराधारानीके भक्तोंसे हमारी विनम्र प्रार्थना है कि वे अपने-अपने स्थानपर व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूपसे प्रतिवर्ष इस महोत्सवका आयोजन करें और इन पदोंका गान-कीर्तन करके श्रीराधारानीकी कृपा प्राप्त करें। ऐसा करके वे परमश्रद्धेय श्रीभाईजी एवं पूज्य श्रीबाबाद्वारा प्रचारित साधना-जगत्की एक महती परम्पराको अक्षुण्ण बनाये रखनेमें अपना सहयोग प्रदानकर अवश्य विशेष पुण्यके भागी बनेंगे।

श्रीश्रीराधाष्टमी महामहोत्सव,
संवत् २०३०
गीतावाटिका, गोरखपुर

प्रेमियोंके कृपा-कणका भिक्षुक—
चिम्मनलाल गोस्वामी
'कल्याण'-सम्पादक

❀ श्रीराधा ❀

श्रीराधामाधव सेवा संस्थानका उद्देश्य

नित्यलीलालीन परमश्रद्धेय श्रीभाईजीके कतिपय श्रद्धालुओं, मित्रों, प्रेमियों एवं स्वजनोंने श्रद्धेय श्रीभाईजीका आशीर्वाद लेकर महाशिवरात्रि संवत् २०२४ वि० के दिन गोरखपुरमें 'श्रीराधामाधव सेवा-संस्थान' की स्थापना की थी। इस संस्थाके विषयमें श्रीभाईजीने लिखा है— 'श्रीराधामाधव सेवा संस्थान एक संस्था है जिसके उद्देश्य बहुत अच्छे हैं और जहाँतक सदाचार, त्यागयुक्त साधन, नियमित जीवन और सेवाका क्षेत्र है, वहाँतक मैं उसको बहुत उपादेय समझता हूँ।.....'संस्थान' के लिये साधन-नियम मेरे ही द्वारा निर्देश किये हुए हैं।'

इस संस्थानके तीन प्रमुख उद्देश्य हैं :—

(१) आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक कल्याण—अर्थात् श्रीराधामाधवके प्रति विशुद्ध, निःस्वार्थ एवं आत्मसमर्पणसे पूर्ण भक्तिका प्रचार-प्रसार करना।

(२) समाज-सेवा— अर्थात् दिव्य प्रेम एवं आनन्दके मूर्तिमान् विग्रह श्रीराधामाधवका प्राणिमात्रमें दर्शन करते हुए यथावश्यक उपकरणों—अन्न, वस्त्र, जल, औषध, आर्थिक सहयोग, आवास आदिके द्वारा उनकी सेवा करना।

(३) स्वस्थ एवं सत्साहित्यका प्रकाशन एवं प्रचार—अर्थात् आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थानके लिये, विशुद्ध भक्ति-पक्षके प्रचारके लिये, अनैतिक प्रवृत्तियोंके उन्मूलन एवं नैतिकताके विकासके लिये प्राचीन और नवीन सत्साहित्यका संग्रह, संरक्षण, प्रचार एवं प्रकाशन करना ।

परमश्रद्धेय श्रीभाईजीने अपने जीवन, कार्य, वाणी एवं लेखनीद्वारा व्यावहारिक साधनाका तथा 'श्रीराधामाधव'-उपासनाका एक ऐसा सरल तथा निरापद स्वरूप प्रदर्शित किया है, जिसको अपनाकर चलनेवालोंका नैतिक स्तर निरन्तर उन्नत होता जाता है और वे सांसारिक भोगोंके दलदलसे—नीच कामके चंगुलसे निकलकर मोक्षको भी लघु बना देनेवाले विशुद्ध भगवत्प्रेम-राज्यमें अनायास ही प्रवेश पा सकते हैं। अतएव उपर्युक्त तीन उद्देश्योंके अन्तर्गत कार्य करनेके साथ ही श्रीभाईजीके जीवन, कृतित्व एवं साहित्यके प्रचार एवं प्रसार-कार्यको संस्थान प्राथमिकता देता है ।



श्रीराधामाधव सेवा संस्थानके प्रकाशन

	पुस्तक	मूल्य
१	भाईजी: पावन स्मरण	५१.००
२	श्रीकृष्णकी व्रजलीलाएं	४.००
३	श्रीकृष्ण चरितामृत काव्य	२.२५
४	श्रीराधाकृष्ण-लीला प्रसङ्ग	२.००
५	श्रीराधाकृष्ण की मधुर लीलाएं	३.७५
६	नरसी जी रौ माहेरौ [हिन्दी एवं अंग्रेजी अनुवाद सहित]	२.७५
७	रस तरंगिणी	४.००
८	प्रीति संदोहिनी	३.००
९	पांच पगडंडियाँ	२.००
१०	मार्कण्डेय आख्यान	१.४०
११	साधन-नियमावली	.३५
१२	व्रजभावका ककहरा	.५५
१३	गोपीगीत	.२५
१४	श्रीकनकधारास्तोत्रम्	.४०
१५	रस आणिभाव	.३५
१६	रास पञ्चाध्यायी (मूल)	.३०
१७	युगल सहस्रनाम स्तोत्र	.२०
१८	व्रतोत्सव वर्णन	.५०
१९	बज्मे-ए-वृन्दावन	.५०
२०	श्रीराधाकृपा कटाक्ष स्तवराज [हिन्दी तथा अंग्रेजी पद्यानुवाद सहित]	.२५
२१	श्रीराधाकृपा कटाक्ष स्तवराज [उर्दू पद्यानुवाद सहित]	.३०

	पुस्तक	मूल्य
२२	विलक्षण प्रेम और विलक्षणकृपा	.१०
२३	श्रीकृष्णजन्माष्टमीका महान् महोत्सव	.२०
२४	श्रीराधाके दिव्य रूप और उनके आराधनका महत्व	.१५
२५	श्रीराधामाधवका दिव्य स्वरूप	.१२
२६	पगली बूआ	.२५
२७	श्रीविष्णुप्रिया-विलाप गीत (हिन्दी)	.८०
२८	श्रीराधामाधव-चरन बंदौं बारंबार [परिक्रमा-पद-पुस्तिका]	.२५
२९	रस और भाव	.२०
३०	श्रीराधामाधव-रस-सुधा (संस्कृत अनुवाद-सहित)	.२५
३१	,, ,, (अंग्रेजी अनुवाद-सहित)	.३०
३२	,, ,, (कन्नड़ अनुवाद-सहित)	.३०
३३	,, ,, (फ्रेंच अनुवाद-सहित)	.३०
३४	,, ,, (जर्मन अनुवाद-सहित)	.३०
३५	रस और भाव (सिंधी अनुवाद-सहित)	.२०
३६	,, (मलयालम् अनुवाद-सहित)	.२५
३७	,, (तेलगु अनुवाद-सहित)	.२०
३८	,, (तामिल अनुवाद-सहित)	.२५
३९	,, (कन्नड़ अनुवाद-सहित)	.२०
40	Flames of Faith	1.50
41	The Impersonal Agony	2.00



श्रीराधा

पद-सूची

पद-संख्या — पदोंकी प्रथम पंक्ति — पृष्ठ-संख्या

(च) श्रीराधा-स्तवन

(छ) श्रीराधा-माधव प्रीति-सम्बन्धी स्फुट पद

(ज) श्रीराधाकुमारीकी आरती



श्रीराधामाधव-चरन बंदौं बारंबार

वन्दना एवं प्रार्थना

[१]

(राग टोड़ी—तीन ताल)

बंदौं राधा-पद-रज पावन।
स्याम- सुसेवित, परम पुन्यमय, त्रिबिध ताप बिनसावन॥
अनुपम परम अपरिमित महिमा सुर-मुनि-मन तरसावन।
सर्वाकर्षक रसिक कृष्णघन दुर्लभ सहज मिलावन॥

'भाईजी'

[२]

(दोहा)

मन्मथ-मन्मथ मन मथत जाके सुषमित अंग।
मुख-पंकज-मकरंद चित पियत स्याम द्दग भृंग॥ १॥
जाके अंग सुगंध कौं नित नासा ललचात।
तन चाहत नित परसिबौ जाकौ मधुमय गात॥ २॥
मधु-रसमयि बचनावली सुनिबे कौं नित कान।
हरि के लालाइत रहत, तजि गुरुता कौ भान॥ ३॥
जाके मधुर प्रसाद कौ मधु रस चाखन हेतु।
हरि-रसना अकुलात अति तजि दुस्त्यज श्रुति-सेतु॥ ४॥
जाकी नख-दुति लखि लजत कोटि कोटि रबि-चंद।
बंदौं तिन राधा-चरन-पंकज सुचि सुखकंद॥ ५॥

'भाईजी'

[३]

(दोहा)

श्रीराधारानी-चरन वंदौं वारंबार ।
जिन के कृपा कटाच्छ तैं रीझैं नंदकुमार ॥
जिन के पद-रज-परस तें स्याम होयँ बेभान ।
वंदौं तिन पद-रज-कननि मधुर रसनि के खान ॥
जिन के दरसन हेतु नित बिकल रहत घनस्याम ।
तिन चरनन मैं बसै मन मेरौ आठौं जाम ॥
जिन पद पंकज पै मधुप मोहन दृग मँड़रात ।
तिन की नित झाँकी करन मेरौ मन ललचात ॥
'रा' अच्छर कौं सुनत हीं मोहन होत विभोर ।
बसै निरंतर नाम सौ 'राधा' नित मन मोर ॥

× × × ×

दो०—वंदौं श्रीराधाचरन पावन परम उदार ।
भय-विषाद-अग्यान हर प्रेमभक्ति-दातार ॥

'भाईजी'

[४]

(दोहा)

श्रीराधारानी चरन विनवौं वारंबार ।
विषय-वासना नास करि, करौ प्रेम-संचार ॥
तुम्हरी अनुकंपा अमित, अविरत, अकल, अपार ।
मोपर सदा अहैतुकी बरसत रहत उदार ॥
अनुभव करवावौ तुरत, जातें मिटैं विकार ।
रीझैं परमानंदघन मो पै नंदकुमार ॥
पर्‌यौ रहौं नित चरन-तल, अर्‌यौ प्रेम-दरबार ॥
प्रेम मिलै मोय दुहुन के पद-कमलनि सुखसार ॥

'भाईजी'

[५]

(राग परज—ताल कहरवा)

जिनका शुचि सौन्दर्य-सुधा-रस-निधि नित नव बढ़ता रहता ।
जिनका मधु माधुर्य माधुरी नित नवसे भरता रहता ॥
नित नवीन निरुपम भावोंका जिसमें सदा उदय होता ।
जिसमें अतुल तरंगें नित नव उठतीं, नहीं विराम होता ॥
जिसमें अवगाहन कर कभी न होते तृप्त स्वयं भगवान ।
रसमय स्वयं सदा जिसका रस करते लोलुपकी ज्यों पान ॥
जिनको निज स्वरूप-सद्गुण आनँदका कभी न होता भान ।
शुचि सुन्दरता, मधुर माधुरीका होता न तनिक अभिमान ॥
जो अपने को सदा समझतीं सभी भाँतिसे दीन-मलीन ।
देती रहतीं नित्य मानतीं पर लेनेवाली अति हीन ॥
ऐसी जो प्रियतमा श्यामकी त्यागमूर्ति गुणवती उदार ।
उन श्रीराधा-पदकमलोंमें नमस्कार है बारंबार ॥

'भाईजी'

[६]

(राग भैरवी—ताल कहरवा)

जिन लक्ष्मीकी रूप-माधुरी, जिनका मधुर शील सौजन्य ।
मधुर स्वभाव जनित जिनकी शुचि लीला प्रीति-माधुरी धन्य ॥
जो वैकुण्ठाधीश्वर-वक्ष-विहारिणी नित प्रेमार्णव-मग्न ।
जिनकी सेवा-अर्चामें नित रहते सुर-मुनिगण संलग्न ॥
राधाकी समता न कर सके उन लक्ष्मीजीके गुण-रूप ।
वे राधा निज चरण-कमल-रज परम, मुझे दें दान अनूप ॥

'भाईजी'

[७]

(राग जंगला—ताल कहरवा)

निज-सुख-काम-गन्धका जिनमें किंचित् भी न कल्पना लेश ।
प्रेम-दिनेश प्रकट रहता नित, मिटा काम-तम, रहा न शेष ॥
जिनके कर्म विचार सभीमें सदा एक प्रियतम-सुख-भाव ।
सुखमय प्रिय-मुख दर्शनका नित नया नया उठता सच्चा चाव ॥
ऐसी कृष्ण-सुखैक-स्वरूपा कृष्ण-मानसा प्रेमागार ।
चरणकमलमें मुझे स्थान दें, करें कृपा-रस-वृष्टि अपार ॥

'भाईजी'

[८]

(राग लावनी तर्ज—ताल कहरवा)



श्री 'ललिता' लावण्य ललित सखि
गोरोचन-आभा युत अङ्ग ।
विद्युद्-वर्णि निकुञ्ज-निवासिनि,
वसन रुचिर शिखिपिच्छ सुरङ्ग ॥
इन्द्रजाल-निपुणा, नित करती
परम स्वादु ताम्बूल प्रदान ।
कुसुम-कला-कुशला, रचती कल
कुसुम-निकेतन कुसुम-वितान ॥



सखि 'विशाखा' विद्युत्-वर्णा
रहती बादल-वर्णा कुञ्ज ।
तारा-प्रभा सुवसन सुशोभित,
मन नित मग्न श्याम-पद-कञ्ज ॥
कर्पूरादि सुगन्ध-द्रव्य युत
लेपन करती सुन्दर अङ्ग ।
बूटे-वेल बनाती, रचती
चित्र विविध रुचि अँग-प्रत्यङ्ग ॥



'चित्रा' अङ्ग-कान्ति केसरी-सी,
काँच-प्रभा-से वसन ललाम ।
कुञ्ज-रङ्ग किञ्जल्क कलित अति,
शोभामय सब अङ्ग सुठाम ॥
विविध विचित्र वसन-आभूषण-
से करती सुन्दर शृङ्गार ।
करती सांकेतिक अनेक
देशोंकी भाषाका व्यवहार ॥



सखी 'इन्दुलेखा' शुचि करती
शुभ्र-वर्ण शुभ कुञ्ज निवास।
अङ्ग-कान्ति हरताल सदृश रँग
दाड़िम कुसुम वसन सुखरास॥
करती नृत्य विचित्र भङ्गिमा
संयुत नित नूतन अभिराम।
गायन-विद्या-निपुणा, व्रजकी
ख्यात गोपसुन्दरी ललाम॥



'चम्पकलता' कान्ति चम्पा-सो,
कुञ्ज तपे सोनेके रङ्ग।
नीलकण्ठ-पक्षीके रँगके
रुचिर वसन धारे शुचि अङ्ग॥
चावभरे चित चँवर डुलाती
अविरत निज कर-कमल उदार।
द्यूत-पण्डिता; विविध कलाओं-
से करती सुन्दर शृङ्गार॥



सखी 'रङ्गदेवी' बसती अति
रुचिर निकुञ्ज, वर्ण जो श्याम।
कान्ति कमल-केसर-सो शोभित,
जवा कुसुम-रँग वसन ललाम॥
नित्य लगाती रुचि कर-चरणों-
में यावक अतिशय अभिराम।
आस्था अति त्यौहार-व्रतोंमें,
कला-कुशल शुचि शोभाधाम॥



सखी 'तुङ्गविद्या' अति शोभित
कान्ति चन्द्र, कुङ्कुम-सी देह ।
वसन सुशोभित पीत वर्ण वर,
अरुण निकुञ्ज, भरी नव नेह ॥
गीत-वाद्यसे सेवा करती
अतिशय सरस सदा अविराम ।
नीति-नाट्य-गान्धर्व-शास्त्र-
निपुणा रस-आचार्या अभिराम ॥

सखी 'सुदेवी' स्वर्ण-वर्ण-सी,
वसन सुशोभित मुँगा-रङ्ग ।
कञ्ज हरिद्रा-रङ्ग मनोहर
करती सकल वासना-भङ्ग ॥
जल निर्मल पावन सुरभितसे
करती जो सेवा अभिराम ।
ललित लाड़िलीकी जो करती
वेणी रचना परम ललाम ॥



(दोहा)

अष्ट सखी करतीं सदा सेवा परम अनन्य ।
राधा-माधव-युगलकी, कर निज जीवन धन्य ॥
इनके चरण सरोजमें बारंबार प्रणाम ।
करुणा कर दें श्रीयुगल-पद-रज-रति अभिराम ॥

'भाईजी'

[९]

(राग मालकोस–तीन लाल)

स्वामिनी हे वृषभानुदुलारि !
कृष्णप्रिया, कृष्णगतप्राणा, कृष्णा, कीर्तिकुमारि ॥
नित्य निकुन्जेस्वरि, रासेस्वरि, रसमयि, रस-आधार ।
परम रसिक रसराजाकर्षिनि, उज्जवल-रस की धार ॥
हरिप्रिया अहलादिनी हरि-लीला-जीवन की मूल ।
मोहि बनाय राखु निसिदिन निज पावन पद की धूल ॥
'भाईजी'

[१०]

(राग पीलू–तीन लाल)

दयामयि स्वामिनि परम उदार !
पद-किंकरि की किंकरि-किंकरि करौ मोय स्वीकार ॥
दूर करौं निकुन्ज-मग-कंटक-कुस सब सदा बुहार ।
स्वच्छ करौं तव पगतरि पावन धूर-धार सब झार ॥
देखौं दूरहि तैं तव प्रियतम संग सुललित विहार ।
नित्य निहारत रहौं, मिलै कछु सेवा की सनकार ॥
पद-सेवन कौ बढ़ै चाव नित काल अनंत अपार ।
अर्पित रहै सदा सेवा में अंग-अंग अनिवार ॥
कबहुँ न जगै दूसरी तृस्ना, कबहुँ न अन्य विचार ।
रहै न हितहूँ कछु 'मेरौपन', 'अहंकार' हो छार ॥
होयँ तुम्हारे मन के ही वस, मेरे सब व्यौहार ।
बनौ रहे नित तुम्हरौ ही सुख मेरो प्रानाधार ॥
'भाईजी'

[११]

(राग धनाश्री–तीन ताल)

राधाजू हम पै आजु ढरौ !
निज, निज प्रीतम की पद-रज-रति हमैं प्रदान करौ ॥
विषम विषय-रस की सब आसा-ममता तुरत हरौ ।
भुक्ति-मुक्ति की सकल कामना सत्वर नास करौ ॥
निज चाकर-चाकर-चाकर की सेवा दान करौ ।
राखौ सदा निकुन्ज निभृत में, झाड़ूदार वरौ ॥
'भाईजी'

[१२]

(दोहा)

स्यामस्वामिनी राधिके ! करौ कृपा कौ दान।
सुनत रहैं मुरली मधुर, मधुमय बानी कान॥
पद-पंकज-मकरंद नित पियत रहैं दृग-भृंग।
करत रहैं सेवा परम सतत सकल सुचि अंग॥
रसना नित पाती रहै दुर्लभ भुक्त प्रसाद।
बानी नित लेती रहै नाम-गुननि-रस-स्वाद॥
लगौ रहै मन अनवरत तुम में आठौ जाम।
अन्य स्मृति सब लोप हों सुमिरत छवि अभिराम॥
बढ़त रहै नित पलहिं-पल दिव्य तुम्हारौ प्रेम।
सम होवैं सब द्वंद पुनि, बिसरैं जोगच्छेम॥
भुक्ति-मुक्ति की सुधि मिटै, उछलैं प्रेम-तरंग।
राधा-माधव सरस सुधि करैं तुरत भव-भंग॥

'भाईजी'

[१३]

(राग भैरवी—ताल कहरवा)

हे राधे ! हे श्याम-प्रियतमे ! हम हैं अतिशय पामर दीन।
भोग-रागमय, काम-कलुषमय मन प्रपञ्च-रत, नित्य मलीन॥
शुचितम दिव्य तुम्हारा दुर्लभ यह चिन्मय, रसमय दरबार।
ऋषि-मुनि-ज्ञानो-योगिका भी नहीं यहाँ प्रवेश-अधिकार॥
फिर हम जैसे पामर प्राणी कैसे इसमें करें प्रवेश।
मनके कुटिल, बनाये सुन्दर ऊपरसे प्रेमीका वेश॥
पर राधे ! यह सुनो हमारी दैन्यभरी अति करुण पुकार।
पड़े एक कोनेमें जो हम देख सकें रसमय दरबार॥
अथवा जूती साफ करें, झाड़ू दें—सौंपो यह शुचि काम।
रजकणके लगते ही होंगे नाश हमारे पाप तमाम॥
होगा दम्भ दूर फिर पाकर कृपा तुम्हारीका कण-लेश।
जिससे हम भी हो जायँगे रहने लायक तव पद-देश॥
जैसे-तैसे हैं पर स्वामिनि ! हैं हम सदा तुम्हारे दास।
तुम्हीं दया कर दोष हरो, फिर दे दो निज पद-तलमें वास॥
सहज दयामयि ! दीनवत्सला ! ऐसा करो स्नेहका दान।
जीवन-मधुप धन्य हो जिससे कर पद-पङ्कज मधुका पान॥

'भाईजी'

[१४]

(दोहा)

श्रीराधा ! अब देहु मोहि तव पद-रज-अनुराग ।
जातें इह-पर-भोग में होय उदय वैराग ॥
मोच्छहु की माया मिटै, कटैं सकल भव-भोग ।
तुम दोउन के चरन कौ बन्यौ रहै संजोग ॥
जो कछु तुम चाहौ, करौ राधा-माधव ! दोउ ।
तुम्हरे मन की सहज रुचि चाह जु मेरी होउ ॥
सेवा कौ कछु काम जो हो मेरे अनुहार ।
छोटौ-मोटौ बकसि मोहि करौ कृपा-विस्तार ॥
पर्यौ रहौं नित चरन-तल, परसौं नित पद धूल ।
पगदासी पौंछत रहौं अग-जग सगरौ भूल ॥

'भाईजी'

[१५]

(दोहा)

हे राधे रासेश्वरी ! रसकी पूर्ण निधान ।
हे महान महिमामयी ! अमित श्याम-सुख-खान ॥
पाप-ताप-हारिणी, हरणि सत्वर सभी अनर्थ ।
परम दिव्य रस दायिनि पञ्चम शुचि पुरुषार्थ ॥
यद्यपि हैं सब भाँति हम अति अयोग्य, अघबुद्धि ।
सहज कृपामयि ! कीजिये पामर जनकी शुद्धि ॥
अति उदार ! अब दीजिये हमको यह वरदान ।
मिले मञ्जरीका हमें दासी-दासी-स्थान ॥

'भाईजी'

[१६]

(दोहा)

करौ कृपा, श्रीराधिका ! विनवौं बार बार ।
बनी रहे स्मृति मधुर, शुचि, मङ्गलमय, सुखसार ॥
श्रद्धा नित बढ़ती रहै, बढ़ै नित्य विश्वास ।
अर्पण हों अवशेष तव जीवनके सब श्वास ॥

'भाईजी'

[१७]

श्लोक

यस्याः कदापि वसनाञ्चलखेलनोत्थ-
धन्यातिधन्यपवनेन कृतार्थमानी ।
योगीन्द्रदुर्गमगतिर्मधुसूदनोऽपि
तस्या नमोऽस्तु वृषभानुभुवो दिशोऽपि ।।

ब्रह्मेश्वरादिसुदुरूहपदारविन्द-
श्रीमत्परागपरमाद्भुतवैभवायाः ।
सर्वार्थसाररसवर्षिकृपार्द्रदृष्टे-
स्तस्या नमोऽस्तु वृषभानुभुवो महिम्ने ।।

यो ब्रह्मरुद्रशुकनारदभीष्ममुख्यै-
रालक्षितो न सहसा पुरुषस्य तस्य ।
सद्यो वशीकरणचूर्णमनन्तशक्तिं
तं राधिकाचरणरेणुमनुस्मरामि ।।

आधाय मूर्द्धनि यमापुरुदारगोप्यः
काम्यं पदं प्रियगुणैरपि पिच्छमौलेः ।
भावोत्सवेन भजतां रसकामधेनुं
तं राधिकाचरणरेणुमहं स्मरामि ।।

वृन्दावनेश्वरि तवैव पदारविन्दं
प्रेमामृतैकमकरन्दरसौघपूर्णम् ।
हृद्यर्पितं मधुपतेः स्मरतापमुग्रं
निर्वापयत्परमशीतलमाश्रयामि ।।



जय-गान

[१८]

(राग खमाच—ताल दादरा)

जयति जय राधा रसिक-मनि-मुकुट-मनहरनी श्रिये ।
पराभक्ति - प्रदायनी करि कृपा करुनानिधि प्रिये ।।
जयति गौरी नवकिसोरी सकल सुख सीमा श्रिये ।
जयति रति-रस-वर्धिनी अति अद्भुता सदया हिये ।।
जयति आनँदकंदनी जगवंदनी वर-वरनिये ।
जयति स्यामा अमित-नामा वेदविधि निर्वाचिये ।।
जयति रासविलासिनी कल कला कोटि प्रकासिये ।
जयति विविध विहार करनी रसिकवरनी सुभाषिये ।।
जयति चंचल चारुलोचनि दिव्य वस्त्राभरनिये ।
जयति प्रेमा प्रेमसीमा कोकिला-कल-बैनिये ।।
जयति कंचन दिव्य - अंगी नवल नीरज नैनिये ।
जयति वल्लभ-वल्लभा आनन्द कलभा तरुनिये ।।
जयति नागरि गुन-उजागरि प्रानधन - मन - हरनिये ।
जयति नौतम-नित्य-लीला नित्यधाम-निवासिये ।।
जयति गुन-माधुर्य भूपा-सिद्धिरूपा सक्तिये ।
जयति सुद्ध - सुभाव - सीला स्यामला सुकुमारिये ।।
जयतिजस जग प्रचुर परिकर(श्री)हरिप्रिया जीवन जियें ।।

[१६]

(राग खमाच—ताल दादरा)

राधे राधे राधिके जय राधे राधे राधिके।
राधे राधे राधिके श्रीराधे राधे राधिके॥

कृष्ण कान्त मनोहरा; जय राधे० सर्वगुणगण-तत्परा। श्रीराधे०
कृष्ण मनमधुकरहिता; जय राधे० मालतीवन महकिता। श्रीराधे०
कृष्ण आनँददायिका; जय राधे नित्य नौतम नायिका। श्रीराधे०
कृष्ण-सुखदा सागरी; जय राधे० अलित रूप उजागरी। श्रीराधे०
कृष्ण-चित्ताकर्षिनी; जय राधे० सदा रसघनवर्षिनी। श्रीराधे०
कृष्ण-पंकज-पोषिनी; जय राधे० समरहियदुखशोषिनी। श्रीराधे०
कृष्ण-हिय-सर हंसिनी; जय राधे० सकललोकप्रसंसिनी। श्रीराधे०
कृष्ण-तरुबर-बल्लरी; जय राधे० सदा अमृत-रस भरी। श्रीराधे०
कृष्ण मनमृग डोरिका; जय राधे० वसीकरन किसोरिका। श्रीराधे०
कृष्ण प्राणकपूरहित; जय राधे० महागुंजा मंजुलित। श्रीराधे०
कृष्ण अलिमन-रंजिनी; जय राधे० सहजसुरभित कंजनि। श्रीराधे०
कृष्ण चातक स्वातिकी; जय राधे० जीवजीवनि चातकी। श्रीराधे०
कृष्ण कनक सुहागिनी; जय राधे० हरिप्रिये बड़भागिनी। श्रीराधे०
कृष्ण-जलज-जलासय; जय राधे० अहर्निस आधारमय। श्रीराधे०
कृष्ण-रस-आस्वादिनी; जय राधे० उर सदा उन्मादिनी। श्रीराधे०
कृष्ण-संपति सर्वसा; जय राधे० प्रेयसी प्रियतम-वसा। श्रीराधे०
कृष्ण तन-घन दामिनी; जय राधे० हरिप्रिया श्रीस्वामिनी। श्रीराधे०

[२०]

(राग भैरव—ताल कहरवा)

बृंदावन - रानी श्रीराधा। मोहन - मन - मानी श्रीराधा॥ १॥
जय नित्यविहारिनि श्रीराधा। ब्रज-सुख विस्तारिनि श्रीराधा॥ २॥
कीरति की कन्या श्रीराधा। सब ही विधि धन्या श्रीराधा॥ ३॥
जय रासविलासिनि श्रीराधा। नित कुंज निवासिनि श्रीराधा॥ ४॥
हरि-उर-वनमाला श्रीराधा। गुन-रूप-रसाला श्रीराधा॥ ५॥
श्रीदामा-अनुजा श्रीराधा। वृष-दिनमनि-तनुजा श्रीराधा॥ ६॥
रसिकन की स्वामिनि श्रीराधा। करुनानिधि-नामिनि श्रीराधा॥ ७॥

वंसीवट-वासिनि श्रीराधा। संगीत-प्रकासिनि श्रीराधा ॥ ८ ॥
श्रीकृष्न-सिरोमनि श्रीराधा। जय स्याम-सजीवनि श्रीराधा ॥ ९ ॥
आनंद-रसायिनि श्रीराधा। प्रीतम-सुखदायिनि श्रीराधा ॥ १० ॥
अनुराग-सुवेली श्रीराधा। सौभाग्य-नवेली श्रीराधा ॥ ११ ॥
सरसीरुह-लोचनि श्रीराधा। हरि-विरह-विमोचनि श्रीराधा ॥ १२ ॥
गोपाल-उपासिनि श्रीराधा। वृन्दावन-वासिनि श्रीराधा ॥ १३ ॥
श्रीगान-सुधानिधि श्रीराधा। प्रेमावधि सब विधि श्रीराधा ॥ १४ ॥
जय नख-चंद्रावलि श्रीराधा। प्रीतम-प्रेमावलि श्रीराधा ॥ १५ ॥
ललितादिक-प्यारी श्रीराधा। अतिरूप-उज्यारी श्रीराधा ॥ १६ ॥
मंगल की मूरति श्रीराधा। व्रज-वन-सुख पूरति श्रीराधा ॥ १७ ॥
व्रजचंद-कुमोदिनि श्रीराधा। भांडीर-विनोदिनि श्रीराधा ॥ १८ ॥
लीला-रस-रंगिनि श्रीराधा। अनुराग-अनंगिनि श्रीराधा ॥ १९ ॥
त्रिभुवन-ठकुरायनि श्रीराधा। गोविंद-गुसाँयनि श्रीराधा ॥ २० ॥
गोपी-जन-मंडिनि श्रीराधा। रस-रासि अखंडिनि श्रीराधा ॥ २१ ॥
नटनागर-भामा श्रीराधा। परिपूरन कामा श्रीराधा ॥ २२ ॥
तरुनी-मनि दच्छनि श्रीराधा। सब भाँति सुलच्छनि श्रीराधा ॥ २३ ॥
कल केलि तरंगिनि श्रीराधा। लावन्य-विभंगिनि श्रीराधा ॥ २४ ॥
कात्यायनि-वंदिनि श्रीराधा। अभिलाष अमंदिनि श्रीराधा ॥ २५ ॥
गोपी-चूड़ामनि श्रीराधा। सुषमा-महिमा मनि श्रीराधा ॥ २६ ॥
रामा अभिरामा श्रीराधा। स्यामा सुखधामा श्रीराधा ॥ २७ ॥
रस-रास रचावनि श्रीराधा। नटराज-नचावनि श्रीराधा ॥ २८ ॥
व्रज-जीवन जीवनि श्रीराधा। निरवधि रसपीवनि श्रीराधा ॥ २९ ॥
जमुना-जल-विहरिनि श्रीराधा। लीलामृत लहरिनि श्रीराधा ॥ ३० ॥
निगमादि-अगम्या श्रीराधा। प्रेमावधि रम्या श्रीराधा ॥ ३१ ॥
जग-वंदन वंदित श्रीराधा। नँद-नंदन-नंदित श्रीराधा ॥ ३२ ॥
निसि-जागर-साजित श्रीराधा। सुख-सेज-विराजित श्रीराधा ॥ ३३ ॥
व्रज-चंद-चकोरी श्रीराधा। वृषभान-किसोरी श्रीराधा ॥ ३४ ॥
व्रज-मोहन-मोहिनि श्रीराधा। अभिलाषनि दोहिनि श्रीराधा ॥ ३५ ॥
वृन्दावन-सोभा श्रीराधा। क्रीड़ा-तरु-गोभा श्रीराधा ॥ ३६ ॥
अतिसयरति-रूपिनि श्रीराधा। माधुर्य अनूपिनि श्रीराधा ॥ ३७ ॥

कमनीय कुमारी श्रीराधा । हरिवल्लभ-प्यारी श्रीराधा ॥३८॥
श्रीकृष्णाकर्षिनि श्रीराधा । आनँद घन बर्षिनि श्रीराधा ॥३६॥
दिव्यांसुक-वेसी श्रीराधा । अति-मंजुल-केसी श्रीराधा ॥४०॥
अभिसार-प्रपन्ना श्रीराधा । अत्यन्त प्रसन्ना श्रीराधा ।४१॥
कल-केलि-परावधि श्रीराधा । रस-रीति रहःसिधि श्रीराधा ॥४२॥
'भाईजी'

[२१]

(राग कौलिंगड़ा—ताल कहरवा)

जय राधे ! जय राधे ! जय राधे ! जय-जय राधे !
अग-जग-स्वामिनि जय राधे । भगवत-भामिनि जय राधे ।
केशव-कामिनि जय राधे । सुघर सुठामिनी जय राधे ॥ जय राधे०
हरि-आह्लादिनि जय राधे । मधुमय बादिनो जय राधे ।
प्रेम-विवादिनि जय राधे । मोहन-मादिनि जय राधे ॥ जय राधे०
निरअभिमानिनि जय राधे । अतिसय मानिनि जय राधे ।
आनँदकाननि जय राधे । नेह-सुदानिनि जय राधे ॥ जय राधे०
हरि-मन-हरनी जय राधे । अति सुख करनी जय राधे ।
सुषमा-सरनी जय राधे । मोद-प्रसरनी जय राधे ॥ जय राधे०
सोभाधारा जय राधे । गुन-आगारा जय राधे ।
रूप-अपारा जय राधे । रस-आधारा जय राधे ॥ जय राधे०
रसिक-रसीली जय राधे । गुण गरबीलो जय राधे ।
रूप रँगीली जय राधे । स्याम-हठीली जय राधे ॥ जय राधे०
सरबस-त्यागिनी जय राधे । स्याम सुहागिनि जय राधे ।
बिमल बिरागिनि जय राधे । रसमय रागिनि जय राधे ॥ जय राधे०
पिय-सुख-भूली जय राधे । निज सुख भूली जय राधे ।
हरि-हिय मूली जय राधे । रहती फूली जय राधे ॥ जय राधे०
अति गंभीरा जय राधे । परम सुधीरा जय राधे ।

'भाईजी'

[२२]

(लावनी तर्ज—ताल कहरवा)

बोलो—जय राधे, राधे, बोलो—जय राधे, राधे।
राधा माधवकी प्रान। बोलो—जय राधे, राधे।
राधा मधुमयी महान। बोलो—जय राधे, राधे।
राधा वृषभानुदुलारी, राधा श्रीकीर्तिकुमारी
दोनोंके प्रान समान, बोलो—जय राधे, राधे॥
राधाकी मतिमें सो है, माधवकी मतिमें जो है।
दोनों ही एक मतिमान, बोलो—जय राधे, राधे॥
राधा अति भोली-भाली, माधव मोहन मधुशाली,
दोनोंकी न्यारी बान, बोलो—जय राधे, राधे॥
राधा जब निपट सयानी, माधव सजते अज्ञानी।
दोनोंकी दो पहचान, बोलो—जय राधे, राधे॥
राधा-माधव इकरूपा, लीलामें भिन्न-स्वरूपा,
दोनों ही एक भगवान, बोलो—जय राधे, राधे॥
राधा माधवकी माया, माधव राधाकी छाया,
हैं छाया मायावान, बोलो—जय राधे, राधे॥
राधा माधवकी प्यारी, माधव राधा-मन-हारी,
दोनों दोनोंके प्रान, बोलो—जय राधे, राधे॥
राधा-मनमें जो आती, माधवको वही सुहाती,
दोनोंकी राय समान, बोलो—जय राधे, राधे॥
राधाको सोई सुहावै, माधव मनमें जो आवै,
दोनोंका एक मन जान, बोलो—जय राधे, राधे।
राधा-माधवकी जोड़ी, जीओ जुग लाख करोड़ी,
दोनों हों सुखी महान, बोलो—जय राधे, राधे॥
'भाईजी'

[२३]

(राग झँझोटी—ताल कहरवा)

जय राधे जय, श्रीराधे। जय राधे, जय श्रीराधे॥
रूप रँगीली, गुण-गरबीली, मन-मटकीली जय राधे।
चित-चटकीली, छैल-छबीली, रस-सरसीली श्रीराधे॥ जय राधे०
श्याम-हठीली, सदा रसीली, शुचि शरमीली जय राधे।
द्युति-चमकीली, रस-गटकीली, पिय धमकीली श्रीराधे॥ जय राधे०
श्याम-विहारिणि, हरि-हिय-हारिणी, शोभाधारिणि जय राधे।
प्रिय सुखकारिणि, मुग्धाचारिणी, मदन-विहारिणि श्रीराधे॥ जय राधे०
रस-विस्तारिणि, तमघन-तारिणि, अघ-संहारिणि जय राधे।
विपदा-जारिणि, मोह-निवारिणि, माया-मारिणि श्रीराधे॥ जय राधे०

निजसुख त्यागिनि, स्याम-सुहागिनि, अति बड़भागिनि जय राधे।
विषय-विरागिनि, रसमय-रागिनी, विमल विभागिनि श्रीराधे ॥ जय राधे०
सदा सँयोगिनि नित्य वियोगिनि, अद्भुत योगिनि जय राधे।
कुटुँव कुयोगिनि, हरि-रस-भोगिनि, विछुरत रोगिनि श्रीराधे॥ जय राधे०
मधुर सुहासिनि, मृदु मधु-भाषिनि, ललित सुलासिनि जय राधे।
रास-विलासिनि, प्रेम-प्रकासिनि, पियहिय-वासिनि श्रीराधे ॥ जय राधे०
'भाईजी'

[२४ [
(लावनी तर्ज–राग कहरवा)

जय हो अलवेली सरकार, हमारी राधारानी ॥ ध्रु० ॥
श्री वृंदावन-महारानी, सर्वोपरि सब सुख दानी।
जय-जय प्यारी परम उदार, हमारी राधारानी ॥ १ ॥
हित रंग रँगीली प्यारी, रस-रूप-सिंधु उजियारी।
जय-जय-जय छवि अगम अपार, हमारी राधारानी ॥ २ ॥
हित रासेस्वरि सुकुमारि, पिय-जीवन-प्रानाधारी।
प्यारी जय-जय-जय बलिहार, हमारी राधारानी ॥ ३ ॥
प्रिय अलकलड़ी अलवेली, छन-प्रतिछन रूप नवेली।
जय-जय लाड़ लड़ी सुकुमार, हमारी राधारानी ॥ ४ ॥
हो कृपा दया को सागर, वात्सल्यहिं सिंध उजागर।
जय-जय करुना रस-भंडार, हमारी राधारानी ॥ ५ ॥
छमासोलऽरु परम उदारा, यह सहज सुभाव तुम्हारा।
आगम-निगम न पावैं पार, हमारी राधारानी ॥ ६ ॥
श्रीहरिवंशी हरिदासी, तुम-सहचरि रास-विलासी।
गावैं वेद पुकार-पुकार, हमारी राधारानी ॥ ७ ॥
मोहन बंशीमें गावैं, जमुना-तट ध्यान लगावैं।
राधा-राधा नाम उचार, हमारी राधारानी ॥ ८ ॥
भूलेहु जो सरनै आवै, तुव महल-खवासी पावै।
हो इहि जनमहिं बेड़ा पार, हमारी राधारानी ॥ ९ ॥
चूकऽवगुन सिंधु समाना, लावत नहिं जनके ध्याना।
अरे, बिनु सेवा द्रवौ अपार, हमारी राधारानी ॥ १० ॥
कर्मोंका बंधन छूटै, माया-मरजादा टूटै।
निश्चय पावै नित्य विहार, हमारी राधारानी ॥ ११ ॥
विसरौं नाहीं बिसरावौं, छवि निज रस माहिं छकावौं।
जय-जय दीजै टहल तुम्हार, हमारी राधारानी ॥ १२ ॥
बनवारी हित जू टेरी, माधुरि चरनोंकी चेरी।
अरे अपनावौ कर जू प्यार, हमारी राधारानी ॥ १३ ॥

[२५]

(राग भैरवी—ताल कहरवा)

वृषभानु-दुलारी जय राधे। श्रीकीर्तिकुमारी जय राधे॥
ललिता-सखि प्यारी जय राधे। सर्वोत्तम नारी जय राधे॥
श्रीमाधव-भामिनि जय राधे। निष्कामा कामिनि जय राधे॥
पद गजगति गामिनि जय राधे। पावन रसधामिनी जय राधे॥
मृदु ईषत् हसिनि जय राधे। नवकुञ्ज निवासिनि जय राधे॥
शुचि प्रेम प्रकाशिनि जय राधे। रति दिव्यविकासिनी जय राधे॥
प्रिय-हृदय-विहारिणि जय राधे। मोहन-मन-हारिणि जय राधे॥
प्रिय-ताप-निवारिणि जय राधे। प्रिय-सुख-विस्तारिणि जय राधे॥
नित शुद्धाचारिणि जय राधे। प्रियतम-उर-धारिणि जय राधे॥
प्रिय-पद-अनुरागिनि जय राधे। सब विधि बड़भागिनि जय राधे॥
निज-भोगविरागिनि जय राधे। प्रिय-भोग सु-रागिनि जय राधे॥
नित मंगल-वादिनि जय राधे। शुचि रस-आस्वादिनि जय राधे॥
वैराग्य स्वरूपा जय राधे। विज्ञान अनूपा जय राधे॥
प्रिय मोहन रूपा जय राधे। सेवित सुरभूपा जय राधे॥
अभिमान विहीना जय राधे। प्रिय-सेवा-लीना जय राधे॥
शुचि सद्गुण पीना जय राधे। सब दोष विहीना जय राधे॥
चतुरा अति भोली जय राधे। मृदु मीठी बोली जय राधे।
शुचिताकी झोली जय राधे। पावन रस घोली जय राधे॥
प्रियतम गल-हारा जय राधे। गुणरूप अपारा जय राधे॥
व्रज चंद चकोरी जय राधे। प्रिय बन्धन डोरी जय राधे॥
प्रियतम-सुख-सुखिया जय राधे। कान्ता-गण-मुखिया जय राधे॥
सुंदर सुकुमारी जय राधे। प्रियहिय उजियारी जय राधे॥
लीला रस सरिता जय राधे। प्रिय मन-सुख भरिता जय राधे॥
आनंद-सुधा-निधि जय राधे। माधुर्य-महोदधि जय राधे॥
प्रिय-विरहकातरा जय राधे। प्रिय-मिलन-आतुरा जय राधे॥
प्रिय-मिलनमयी नित जय राधे। नित संग अबाधित जय राधे॥
वर्धन रति-बेली जय राधे। नित नयी नवेली जय राधे॥
रसमयि रासेश्वरि जय राधे। माधव-हृदयेश्वरि जय राधे॥
नित कृष्णाकर्षिणि जय राधे। रस-सुधा-सुवर्षिणि जय राधे॥
नित प्रिय-अनुकूला जय राधे। प्रिय-जीवन-मूला जय राधे॥
हिय सद्गुण छाये जय राधे। नित श्याम लुभाये जय राधे॥
त्रिभुवन जन पावनि जय राधे। शुचि प्रेम-सिखावनि जय राधे॥
जगमंगल कारिणि जय राधे। अघमूल-विदारिणि जय राधे॥

'भाईजी'

[२६]

(गजल—ताल कहरवा)

अतुल आनन्द भर मनमें पुकारो भानु नृपकी जय।
मोदमें मस्त हो बोलो, मातु श्रीकीर्तिदाकी जय॥

भाद्रपद मासकी जय-जय,
पक्ष शुभ शुक्लकी जय-जय।
रुचिर तिथि अष्टमीकी जय,
काल मध्याह्नकी जय-जय।
सरस बरसानुपुरकी जय,
भानुके महलकी जय-जय।
कीर्तिके प्रसवगृहकी जय,
चमारिन दाई-माकी जय॥

चूर आनन्द-मदमें आज बोलो राधिकाकी जय।
सलोने-साँवरे गोविन्द राधाप्राण को जय जय॥

परस्पर चावकी जय-जय,
प्रेमके भावकी जय-जय।
'तत्सुखी प्रेम'की जय-जय,
प्रेमके नेमकी जय-जय॥
अनोखे त्यागकी जय-जय,
विलक्षण रागकी जय-जय।
मधुर अनुरागकी जय-जय,
हमारे भागकी जय-जय॥

परम आह्लादसे बोलो ह्लादिनी राधिकाकी जय।
ह्लादिनीके परम प्रियतम मनोहर श्यामकी जय-जय॥

'भाईजी'





आविर्भाव एवं बधाई

[२७]

(गजल—ताल कहरवा)

जग उठे भाग्य अग-जगके, परम आनन्द है छाया।
श्यामकी ह्लादिनी राधा प्रकटका काल शुभ आया॥
वज उठी देव-दुन्दुभियाँ, गान करने लगे किंनर,
सुर लगे पुष्प बरसाने, अमित आनन्द उरमें भर,
ग्वालिनी-वेष धारणकर सुन्दरी चलीं सुर-जाया॥ १॥
चले सब ग्वाल नर-नारी, वृद्ध-वालक सुसज्जित हो,
देख शोभा परम सहमे देव-दम्पति सुलज्जित हो,
प्रेमके राज्य पावनमें हुआ जो आज मनभाया॥ २॥
यशोदा-नन्द परमानन्द पा अति हो उठे विह्वल,
चले ले भेंट अति अनुपम, खिल उठे हृदय पङ्कज-दल,
लला थे गोद जननीके, प्रफुल्लित थी कलित काया॥ ३॥
ऋषी-मुनि हुए हर्षित, जो बने थे व्रज मधुर गोपी,
फलित होता मनोरथ जान, उनकी देह है ओपी,
हुआ सब ओर जयकारा, मिट गयी सब मलिन माया॥ ४॥

'भाईजी'

[२८]

श्रीराधाजीकी जन्म-आरती

(राग बहार—तीन ताल)

आरति श्रीवृषभानुलली की ।
सत-चित-आनँद-कंद-कली की ॥ टेक ॥
भयभंजिनि भव - सागर - तारिनि,
पाप - ताप - कलि - कल्मष - हारिनि,
दिव्यधाम - गोलोक - विहारिनि,
जनपालिनि जगजननि भलीकी ॥ १ ॥
अखिल विस्व आनंद-विधायिनि,
मंगलमयी सुमंगलदायिनि,
नंदनँदन - पद - प्रेम - प्रदायिनि,
अमिय-राग-रस-रंग-रलीकी ॥ २ ॥
नित्यानंदमयी आह्लादिनि,
आनँदघन - आनंद - प्रसाधिनि,
रसमयि, रसमय-मन उन्मादिनि,
सरस कमलिनी कृष्ण-अलीकी ॥ ३ ॥
नित्य निकुंजेस्वरि रासेस्वरि,
परम प्रेमरूपा परमेस्वरि,
गोपिगणाश्रयि गोपिजनेस्वरि,
विमल - विचित्र - भाव-अवलीकी ॥ ४ ॥

'भाईजी'



[२९]

(राग बागेश्री—तीन ताल)

आठैं भादौं की उजियारी ।
रावल में वृषभानु गोप कैं प्रगटी राधा प्यारी ॥
श्रुति सरूप सब सँग करि लीन्हे व्रजपति हेत बिचारी ।
दासगुपाल बलभ (जू)की स्वामिनि बस कीने गिरधारी ॥

[३०]

(राग सारंग—तीन ताल)

महारस पूरन प्रगट्यौ आनि ।
अति फूलीं घर-घर व्रजनारीं (श्री) राधा प्रगटी जानि ॥
धाईं मंगल-साज सबै लै, महा महोच्छव मानि ।
आईं घर वृषभानु गोप कें, श्रीफल सोहत पानि ॥
कीरति वदन-सुधानिधि देख्यौ, सुन्दर रूप बखानि ।
नाचत-गावत दै कर-तारी, होत न हरख अघानि ॥
देत असीस सीस चरनन धरि, सदा रहौ सुखदानि ।
रसकी निधि व्रज रसिकराय सौं करौ सकल दुख हानि ।

[३१]

(राग आसावरी—ताल कहरवा)

चलौ वृषभान गोप कें द्वार ।
जनम लियौ मोहन हित स्यामा आनँद निधि सुकुमार ॥
गावत जुवति मुदित मिलि मंगल, उच्च मधुर धुनि धार ।
विविध कुसुम कोमल किसलय जुत सोभित बंदनवार ॥
बिदित वेद विधि बिहित विप्रवर कर स्वस्तिन उच्चार ।
मृदुल मृदंग मुरज भेरी ढप दिवि दुँदुभि रवकार ॥
मागध-सूत बंदि-चारन जस गावत मोद अपार ।
हाटक-हीर-चीर पाटंबर देत सँभार-सँभार ॥
धेनु सकल सिंगारि बच्छ जुत लै चले ग्वाल पुकार ।
(जैश्री)हित हरिवंस दूध-दधि छिरकत, माँझ हरिद्रा गार ॥

[३२]

(गजल—ताल कहरवा)

हृदय आनन्द भर बोलो बधाई है !—बधाई है !!
हमारे भाग्य हैं जागे, जो 'लाली' घरमें आई है !!
धन्य वृषभानुपुर सुन्दर,
धन्य वृषभानु-नृप मन्दिर,
धन्य वह कक्ष मङ्गलकर,
अजन्मा जहाँ जाई है ॥ हृदय आनन्द०
शुभ सित पक्ष, भादौं मास,
शुभ अति अष्टमी सुख-रास,
शुभ नक्षत्र अभिजित खास,
जिनमें राधा आई है ॥ हृदय आनन्द०
कामकी कालिमा हरकर,
प्रेमकी छवि प्रकाशितकर,
रस-सुधासे विषय-विष हर,
प्रेमकी बाढ़ छाई है ॥ हृदय आनन्द०
खोलकर नेहके झरने,
सुखी निज स्यामको करने,
हृदय आनन्दसे भरने,
स्वयं श्यामा जु आई है ॥ हृदय आनन्द०
हृदय है यह कन्हैया की,
प्राण है यह कन्हैया की,
आत्मा यह कन्हैया की,
सुधा बरसाती आई है ॥ हृदय आनन्द०
एक ही दो बने हैं जो,
दो रहकर एक ही हैं सो,
रसास्वादन कराने को
यह रसकी सरिता आई है ॥ हृदय आनन्द०
पुकारो भानु नृपकी जय,
औ मैया कीर्तिकी जय-जय,
हुआ दम्पतिका भाग्योदय,
जिनकी कन्या कहाई है ॥ हृदय आनन्द०

'भाईजी'

[३३]

(राग आसावरी—तीन ताल)

भानु-घर उत्सव आज महान।
परमानँद - आनंददायनी प्रगट भई सुख - खान ॥
रूप अनूप, स्वरूप अलौकिक, आनँद-सुधा - समुद्र।
मिट्यौ मोह - तम, दुरित दह्यौ, देखतहीं दुख-दारिद्र ॥
उमग्यौ प्रेम-समुद्र सुद्ध मधु, नस्यौ स्वार्थ कौ बीज।
उखर-यौ विविध अनर्थ-मूल, माया कौ बिटप सबीज ॥
हरसित इत-उत धावत, गावत-नाचत सब पुर लोग।
प्रगटीं धन्य करन जग कौं श्रीराधा सुभ संयोग ॥

'भाईजी'

[३४]

(राग झँझोटी—तीन ताल)

आजु बृषभान - भवन आनँद अति छायौ।
राधा अवतार भयौ, सब कौ मन भायौ ॥
दुंदुभि नभ लगीं बजन, सुमन लगे बरसन।
धाए पुरवासी सब करन कुँअरि-दरसन ॥
मंगल - उत्साह मुदित नारि सकल गावत।
लै लै कमनीय भेंट कीर्ति-महल आवत ॥
नचत बृद्ध-तरुन-बाल, भए सब नचनियाँ।
तिनके मुख धन्य होन प्रगटी रागिनियाँ ॥
राधा कौ जन्म जानि प्रेमी सब धाए।
प्रेम - सुधा - बरसन की आस मन लगाए ॥
राधा बिनु हरै कौन मुन - मन - हर - मन कौं।
प्रगटै बिनु पात्र को अनंद - रस - घन कौं ॥
बरसैगो कृष्नघन पाय पात्र राधा।
रसधारा पावन तब बहैगी बिनु बाधा ॥
आए तहँ विविध वेष सुर - मुनि - रिषि भव - अज।
दरसन कौं, परसन, कौं कुँवरि - चरन - पंकज ॥
आए नंद - जसुमति अति चित में हरषाए।
विविध रत्न - मुकता - मनि भेंट संग लाए ॥
प्रसव - घर पधारि महरि कुँवरि लेत कनियाँ।
चूमत अति लाड़ - चाव जात बलि निछनियाँ ॥
उभय मातु मिलीं अमित स्नेह तन - मन तें।
कहि न जाय मिलन - प्रीति - रीति लघु बचन तें ॥
नंद - बृषभानु मिले हिय सौं हिय लाए।
छायौ चहुँ ओर मोद, गोद नँद भराए ॥

'भाईजी'

[३५]

(राग खमाच—ताल दादरा)

द्वार वृषभान के आजु भई भीर री।
उमगि चल्यौ रसनिधि, छाँड़ि निज तीर री॥
गोपि-गोपि, बाल-बृद्ध तजि धन धाम री।
खिंचे-से आये सब खोय घर-काम री॥
दधि-अच्छत, दूब-हरद कुंकुम भरि थार री।
आय जुरे अगनित जन सजि-सजि सिंगार री॥
नाचत सब नारि-नर छाँड़ि सकल लाज री।
छिरकत दधि-हरद, करत आनँद धुनि गाज री।
गुनीजन गावत सब, नाचत दै ताल री।
आनँद-मद-माते गीत गावत रसाल री॥
भई आज सब की मनभाई सुखद बात री।
नाचि उठे अंग-अंग पुलकित भए गात री॥
आए अज, ईस, इन्द्र, बरुन अरु कुबेर री।
लच्छी, सरसुति, सती, सची देवि ढेर री॥
धरि कैं ग्वाल-गोपी-तन करत कीर्ति-गान री।
किंनर-गंधर्व बने गोप भरत तान री॥
जय-जय बृषभानु, जयति भानु, कीर्तिरानि री।
सब के हित भए आजु परम सुखदानि री॥
बरसि रह्यो रस अनूप भूप भानु द्वार री।
भए सब सब के आनंद-आगार री॥

'भाईजी'

[३६]

(राग कौलिंगड़ा—ताल कहरवा)

वह धन्य घड़ी है आई। कीरति ने राधा जाई।
तब सब दिसि बजी बधाई। सब के मन मुदिता छाई॥
लक्ष्मी बन दाई आई। ग्वालिनि सब मिलि-मिलि धाई।
परसा-घरसा की माई। बनि-ठनि कै सबै लुगाई॥
सब चलीं हिएँ हरषाई। सब ही सब के मन भाई।
कीरति-मंदिर प्रविसाई। जिनि रोकौ, देत दुहाई॥
जब खबर नंद ने पाई। जसुमति कौं संग लेवाई।
लाली-मुख निरखन ताँई। पहुँचे बरसाने आई॥

'भाईजी'

[३७]

(राग सारंग–तीन ताल)

धन्य घरी, धनि भादौं मास।
धनि आठैं तिथि, पख उजियारी,
धनि अभिजित नच्छत्र प्रकास॥
प्रगटीं जामें जग की स्वामिनि,
नित हरि भामिनि सब सुख मूल।
भयौ प्रकास अखिल जन मन–नभ
मिटी ताप तीनहु की सूल॥
घर-घर में छायौ सुख सुचि अति,
घर–घर भए मंगलाचार।
अति उछाह सब मगन नारि–नर
नाचत गावत सजि सिंगार॥
भानु नृपति अति मगन परम सुख
करत अमित मनि–हेम सुदान।
अति उदार, धन–धान्य लुटावत,
ललित ललो सुख हित मतिमान॥
खग–मृग, भृंग–भुजंग, जीव सब,
आनंद–मगन भूलि निज बात।
मन अनुभवत परम सुख, बिनु रितु,
जड तरु–लता प्रफुल्लित गात।
मारुत मंद-सुगंध वहत नभ,
निरमल सीतल तेज अपार।
बिकसी प्रकृति आज चहुँ दिसि, लखि
मूल प्रकृति कौ नव अवतार॥
आई जग के पावन कारन,
सुखनिधि कौं अतिसय सुख दैन।
परिनत भयौ कलुष तजि रतिमय
पावन परम अपावन मैन॥
परब मनावहु, गावहु–नाचहु
आज समुद सब तजि मद-मान।
बाँटहु सबै बधाई मिलि कह
'जय कीरति, जय-जय वृषभान'॥

[३८]

(राग बागेश्री—तीन ताल)

भादौं सुदि आठैं उजियारी।
श्रीवृषभानु गोप कें मंदिर प्रगटी राधा प्यारी॥
नाचत नारि नवेली छबि सौं पहिरें रँग-रँग सारी।
घर-घर मंगल लखि बरसानें, कहत रमा—हौं वारी॥
इक आई, इक आवति गावति, इक साजति सुनि नारी।
चंचल कुंडल ललकें, झलकें, करन विराजत धारी॥
भई बधाई, कही न जाई, छबि छाई अति भारी।
रसभरि खोरि पौरि भइ, दधि-घृत बहि चलि उमगि पनारी॥
कीरति की कुल-कीरति जग में भाग-सुहाग-दुलारी।
दामोदर हित वृंदावन में बिहरत लाल बिहारी॥

[३९]

(राग सारंग—तीन ताल)

आज रावल में जय-जयकार।
प्रगट भई वृषभानु गोप कें श्रीराधा अवतार॥
गृह-गृह तें सब चलीं वेग दै गावत मंगलचार।
प्रगट भई त्रिभुवन की सोभा रूप-रासि सुखसार॥
निरतत, गावत, करत बधाई, भीर भई अति द्वार।
परमानँद वृषभानुनंदिनी जोरी नंददुलार॥

[४०]

(राग भीमपलासी—ताल कहरवा)

प्रकटी राधा रावल में वृषभानू-कीर्ति-दुलारी।
राधा व्रज की ठकुराइन, अभिराम श्याम की प्यारी॥
राधा आह्लादिनि देवी, नित माधव पर बलिहारी।
राधा माधव की आत्मा, माधव से कभी न न्यारी।
राधा नित रास-रसेश्वरि, माधव नित रासविहारी॥
राधा-माधव की लीला शुचि सत्य नित्य अविकारी॥
राधा अर्पण की मूरति, हैं श्याम समर्पण-कारी।
राधा आराधन-रत नित, प्रिय राधाऽऽराधनकारी॥
दोनों दोनों के प्रेमी, प्रेमास्पद रस-भंडारी।
नित एक तत्त्व दो तन हैं, मधु लीलारस विस्तारी॥

'भाईजी'

[४१]

(राग सारंग—तीन ताल)

आज बधाई बाजत रावल।
श्रीवृषभानु राय घर प्रगटी स्यामा स्याम-सुखावल॥
गृह-गृह तें गोपी बनि आई आनंदित नंदावलि।
मानौ कनक-कंज-मकरंदहि पिवत जिवत मधुपावलि॥
नाचत-गावत, बेनु बजावत, हेरि देत गोपावलि।
दधिकाँदौ भादौं झरि लायौ प्रेम मुदित ब्यासावलि॥

[४२]

(राग गजल—ताल कहरवा)

बज रही गाँव रावल में आज मङ्गल-बधाई है।
कीर्तिदा-रानिके घर सुघर राधा कुँवरि जाई है।
मोद मन में अतुल भरकर,
जेवरों-जरोंसे सज कर,
सोच घर-बारका तज कर,
गोपियाँ घर से आई हैं॥ बज रही० ॥
नाचते गान सब करते,
वेणुमें सुर मधुर भरते,
गोप डगमग चरण धरते,
मोद-मदता जु छाई है ॥ बज रही० ॥
बड़े-छोटे हजारों घट,
दही-माखनसे भर झटपट,
गोपिका-गोप सब चटपट
पहुँच हुडदंग मचाई है॥ बज रही० ॥
दही-नवनीत-पय लेकर,
डोलियाँ छोड़ते भर-भर,
दधिकाँदौ ही नहिं रहकर,
नदी गोरस बहाई है॥ बज रही० ॥
वृद्ध-बालक-तरुण अड़ते,
सभी गोरस-समर लड़ते,
कूदते उछलते पड़ते,
लोक-लज्जा गँवाई है ॥ बज रही० ॥
'भाईजी'

[४३]

(राग धनाश्री—तीन ताल)

स्यामघन दामिनि प्रगट भई ।।
रसनृप रसिक-रिझावनि पावनि रम्या सुरसमई ।
अंग-अंग अतुलित श्री-सोभा कोटिक रति लजई ।।
सकल-विश्व-आकर्षक-कर्षनि छवि सौंदर्य छई ।
नित्य पराजित रहत सहत जो अखिल जगत विजई ।।
परम सती प्रिय-सुख-कामिनि नित निज सुख बिसरि गई ।
रूपरासि गुनरासि अमित सुचि प्रगटत नई-नई ।।
'भाईजी'

[४४]

(राग भैरवी—तीन ताल)

प्रगट्यौ सब ब्रज कौ सिंगार ।
कीरति-कूखि औतरी कन्या, सुन्दरता कौ सार ।।
नख-सिख रूप कहाँ लौं बरनौं, कोटि मदन बलिहार ।
परमानँद वृषभानु—नन्दिनी जोरी नन्द-दुलार ।।

[४५]

(राग सारंग—ताल दीपचंदी)

प्रगट भई सोभा त्रिभुवन की श्री वृषभान गोप कें आइ ।
अदभुत रूप देखि ब्रजवनिता रीझि-रीझि कें लेत बलाई ।।
नहिं कमला न सची रति रंभा, उपमा उर न समाई ।
जा हित प्रगट भए ब्रजभूषन, धन्य पिता, धनि माई ।।
जुग-जुग राज करौ दोऊ जन, इत तुम, उत नँदराई ।
उन कें मदनमोहन, इत राधा, 'सूरदास' बलि जाई ।।

[४६]

(राग झँझोटी—ताल दादरा)

प्रगटी अनूप भूप भानु घर दुलारी।
राधा सुचि मधुर-मधुर, कीर्तिदा-कुमारी ॥
चन्द्र - वदन - कमल मधुर, उभय हस्त कमल मधुर।
विसद नयन-कमल मधुर, आनँद विस्तारी ॥
अरुन चरन-कमल मधुर, भौंह मधुर, भाल मधुर।
अधरनि मुसकान मधुर, मोहनी मुरारी ॥
जन्म मधुर, कर्म मधुर, लीला अति ललित मधुर।
भाव मधुर, चाव मधुर, सरबस बलिहारी ॥
त्यागकी सुनीति मधुर, प्रेमकी सुरीति मधुर।
'तत्सुख-सुख' प्रीति मधुर, माधव—मनहारी ॥
'भाईजी'

[४७]

(राग जंगला-ताल कहरवा)

कीर्ति-कुक्षिकी कीर्ति जगत्‌में अनुपमेय, नहिं तुलना और।
प्रकट हुई जिससे माधवकी प्रिया, नित्य सबकी सिर-मौर ॥
नहीं जगत्‌में कहीं किसीका यश वृशभानु नरेश समान।
पिता बने राधाके, जिनके रति-परतंत्र स्वयं भगवान ॥
धरा हुई वह धन्य, हुआ महिमान्वित छोटा रावल ग्राम।
प्रकटीं जहाँ राधिका रानी सच्चित् - सुखमयकी सुखधाम ॥
धन्य सूर्य-शशि, धन्य पुण्य वे अनल, अनिल, शुचि जल, आकाश।
देखा भाग्यवान जिन सबने राधा का प्राकट्य-विकास ॥
धन्य मनुष्य, धन्य पशु-पक्षी, तीर्यक् सारे कीट-पतङ्ग।
देखा श्याम-सुखद राधाका कभी जिन्होंने कोई अङ्ग ॥
धन्य आज हम, जो कर पाये श्याम-स्वामिनीके गुणगान।
धन्य, सुन रहे, मिला रहे जो इन गीतोंमें अपनी तान ॥
'भाईजी'

[४८]

(राग परज-तीन ताल)

तू देखि सुता वृषभानु की।
मृगनैनी सुन्दर सोभानिधि अँग-अँग अदभुत ठान की ॥ १ ॥
गौर बरन बहु कांति बदन की, सरद-चंद-उपमान की।
विश्वमोहनी बालदसा में कटि केहरि सुबँधान की ॥ २ ॥
बिधि की सृष्टि न होइ मनो यह, बानिक और बान की।
चत्रभुज—प्रभु गिरिधर लायक ब्रज प्रगटी जोट समान की ॥ ३ ॥

(४६)
(राग जंगला—ताल कहरवा)

प्रकट हुई वृषभानु-राजगृह राधा परम प्रेमकी खान।
जिनके शुचि माधुर्य दिव्यपर मोहित नित्य स्वयं भगवान ।।
जिनका बढ़ता रहता प्रतिपल नित नूतन सच्चिन्मय रूप।
रसवर्षिणि, रसराजाकर्षिणि, प्रियतम-मन-हर्षिणी अनूप ।।
नित्य निकुञ्जेश्वरि, रासेश्वरि, हरि-हृदयेश्वरि अति पावन।
प्राणाधिका प्रियतमा प्रियकी प्राणेश्वरि नित मन-भावन ।।
काम-कलुष-हारिणि, विस्तारिणि दिव्य त्यागमय प्रेम पुनीत।
अतुलनीय ऐश्वर्य-स्वामिनी, पर अति दीना, सहज विनीत ।।
देती सदा सहज प्रियतमको अविरत वह अपार सुखदान।
पर देनेका स्मरण न रहता, कभी नहीं होता अभिमान ।।
चतुर-चित्त-हारिणि संचारिणि अहंरहित शुचि सेवा-भाव।
सहज सदा वर्धित होता है जिसमें प्रिय-सेवाका चाव ।।
इसीलिये वे नित्य पूर्णतम, पूर्णकाम, श्रीकृष्ण अकाम।
राधाके रस-आस्वादनकी नित इच्छा करते अभिराम ।।
क्योंकि पूर्ण उसमें है पावन राधाका आत्यन्तिक त्याग।
अतः स्व-सुख—कल्पना—शून्य वह रखती प्रियतममें अनुराग ।।
वही प्रेमरूपा राधा है प्रकटी बरसाने में आज।
इसीलिए सब प्रकृति कर रही स्वागत, सजकर सुंदर साज ।।
सभी लोक-लोकान्तरमें है गूंज रहा जय-जय-जय-घोष।
परमानन्द छा रहा अनुपम, नहीं किंतु उसमें सन्तोष ।।
किसी तरह वह व्यक्त नहीं हो सकता मनका परमानन्द।
नहीं शब्द-संकेत कि जिनसे प्रकट हो सके वह स्वच्छन्द ।।

'भाईजी'

[५०]
(राग मालव—ताल कहरवा)

बरसगाँठि वृषभानु-कुँवरि की कीरति गीत गवाए जू।
चंदन-अगर लिपाइ अँगना, मोतिन चौक पुराए जू ।।
नंदीसुर ते नंद-जसोदा सहसुत न्यौति बुलाए जू।
गोपी-गोप, गाय-गोसुत लै चलि बरसाने आए जू ।।
तब वृषभान बड़े आदर सों निज मंदिर पधराए जू।
भीतर भवन जसोदा-कीरति मिलत परम सुख पाए जू ।।
जसुमति-कनिया तें लालन लै कीरति गोद खिलाए जू।
व्रजरानी लइ कुँवरि गोद व्रजनारिन मंगल गाए जू ।।

'भाईजी'

[५१]

(राग सारंग—ताल झप)

बरसानें वर सरोवर प्रगट्यौ अदभुत कमल ।
वृषभानु-किरन-प्रकास पोष्यौ रहत प्रफुलित सदाई यह सरस सुंदर अमल ।।
सखी चहुँ दिसि केसरदल करनिका आकार राजत राधिका-जस धवल ।।
सूरदास मदनमोहन पिय नव मकरंद हित सेवत सदा अति नलिन अलि ।।

[५२]

(राग भैरव—तीन ताल)

प्रगटी नागरि रूप-निधान ।
देखि-देखि बूझत जो परसपर, नहिं त्रिभुवन में आन ।।
उपमा कौं जे-जे कहियत हैं, ते जु भये निरमान ।
कुंभनदास लाल गिरधर की जोरी सहज समान ।।

[५३]

(राग सारंग—ताल कहरवा)

राधा जाई, आनँद लाई, नाचौ रे, नाचौ, सब ग्वाल ।
दधि-माखन की नदी बहाओ, आज सबै हो गये निहाल ।।
अगनित भरे माट माखन-दधि केसर-घोले लाये लोग ।
मतवाले-से लगे छिड़कने खूब परस्पर शुभ-संयोग ।।
आय गई इतने में नँदकी सेना लै माखन-दधि-हाट ।
दधिकाँदोंमें भई हरषधुनि ढुरकन लगे माट-पर-माट ।।
माखन-दधिकी सरिता उमड़ी, बही सुधा आनँदकी धार ।
नाचन लगे भानुनृप, बाबा नन्द समुद सब लाज बिसार ।।
आय मिले बरसाना-रावलके लड़कों सँग तोक-सुदाम ।
रैंदा-पैंदा, ग्वाल-बाल सब, मधुमङ्गल, मनसुख, सुखराम ।।
कूद-कूद सब लगे नाचने माखन-दधि-सरिताके बीच ।
लगे मारने माखन-लौंदे हर्षोन्मत्त उलीच-उलीच ।।
मोदभरे बरसानेवाले बोले 'नँद बाबाकी जय ।'
बोल उठे नंदीश्वरवाले 'जय, वृषभानुराज की जय ।।'

'भाईजी'

[५४]

(राग कालिंगड़ा—तीन ताल)

मैं देखी सुता बृषभान की।
जननी सँग आई ब्रज-रावर सोभा रूप निधान की॥ १॥
नैंक सुभाय ते भृकुटी टेढ़ी, बेनी सरस कमान की।
नैन कटाच्छ रहत चितवत ही, चितवत नीपट अयान की॥ २॥
पग जेहरि कंचन रोचन-सी तनक-सी पोंहोंची पान की।
खगवारी गरें द्वै लर मोतीं, तनक तरुवनी कान की॥ ३॥
लै बैठी हँसि गोद यशोदा, मन में ऐसी बान की।
सूरदास प्रभु मदनमोहन हित जोरी सहज समान की॥ ४॥

[५५]

(राग आसावरी—तीन ताल)

प्रेम की मूरति नागर नट की।
पुन्य थली बरसानें प्रगटी, माया की छाया सब सटकी॥
राधा-प्रेम-सुधा-रस-सरिता अटकत नायँ काहु की हटकी।
चली अबाध अमी-रस-धारा हरि की ओर, कितहुँ नहिं भटकी॥
रागी हरिपद, विषय-बिरागी जन जे अवगाही रस गटकी।
ते सजि गोप-गोपिका आए, लै-लै सिर दधि-माखन-मटकी॥
निरखन लगे, करन न्योछावर, रासि रासि आभूषन-पट की।
सोहत बंदनवार-पाँति सुभ, कदली खंभ, सुमंगल घट की॥
'अचल सुहाग' असीसत बृद्धा, जुवती हँसत-हँसावत मटकी।
नाचत-गावत सुधि बिसारि सब, सहजहिं लाज-सरम सब झटकी॥

'भाईजी'

[५६]

(राग रामकली—तीन ताल)

आज बरसानें बजति बधाई।
भाग बड़े रानी कीरति के जिन यह कन्या जाई॥
दुंदुभि-ढोल, भेरि-सहनाई, बाजे बाजत द्वारें।
श्रीवृषभानु रायजु की पौरी धूम मचो अति भारें॥
दान देत वृषभान भाव तें, जिन जाच्यौ तिहिं काल।
कृष्णदास सब देत असीसन, चिरजीवो यह बाल॥

[५७]

(राग सारंग—तीन ताल)

हेरी हे ! आज बृषभान कें आनँद भयौ।
नाचत गोपी-ग्वाल परसपर, छिरकत हरद-दह्यौ ।।
स्रवन सुनत गृह-गृह तें निकसीं सुंदरि साज सिंगार।
हरद-दूब-अच्छत-दधि-कुमकुम चलि कंचन भरि थार ।।
बीना बेनु बखान महुवरी, बजे पखावज-ताल।
हँसत परसपर प्रेम मुदित मन, गावत गीत रसाल ।।
धनि बृषभान गोप, धनि कीरति, धनि बरसानौ गाम।
धनि-धनि प्रगट भए आनँद निधि, धनि श्रीराधा नाम ।।
सिंधुसुता, गिरिसुता, सची, रति, कोऊ नाँहि समान।
धनि-धनि दास गोबिंद की स्वामिनि, ब्रज की जीवन-प्रान ।।

[५८]

(तर्ज रसिया—तीन ताल)

हौं इक नई बात सुनि आई।
कीरति रानी कुँवरी जाई, घर-घर बजत बधाई ।।
द्वारें भीर गोप-गोपिन की, महिमा बरनि न जाई।
अति आनंद होत बरसानें, रतन-भूमि निधि छाई ।।
नाचत तरुन बृद्ध अरु बालक, गोरस-कीच मचाई।
सूरदास-स्वामिनि सुखदायनि मोहन-सुख हित आई ।।

[५९]

(राग सारंग—तीन ताल)

भानुपुर बाजत बिपुल बधाई।
आनँदघन-आनंदिनि कन्या कीरति रानी जाई ।।
अति कमनीय रूप अतुलित सुचि प्रेम-सुधा-रस-बर्षी।
अखिल जगत जित बिस्व-बिमोहन मोहन मन आकर्षी ।।
उदए भानु भानुघर कोटिन, द्युति उज्ज्वल छिति छाई।
बिनस्यौ काम-कलुष-तम, कोटिन ससि सीतलता आई ।।
जाके दरसन कौं सुर-मुनि, नित सकल लोक ललचावें।
सोइ हरिप्रिया कीर्ति क्रोड़हिं लै हरषित हिय हलरावें ।।
धन्य भए बृषभान, सराहत भव्य भुवन मुनि ग्यानी।
जिन के घर प्रगटीं हरि की हृदयेस्वरि राधारानी ।।
'भाईजी'

[६०]

(लावनी तर्ज–ताल कहरवा)

मँगल बधाइयाँ हो, बँट रही भानू के दरबार।
राधिका प्रेममूरति हो, छबीली ने लीनौ अवतार ।।
सुहासिनि नारियाँ हो, कर रहीं सब कुल के आचार।
गा रहीं गीत मँगल हो, लौन-राई कर अति मनुहार ।।
सुहासिनि सब बड़भागिनि। जय-जय। कर रहीं नेग सुहागिनि ।। जय-जय ।।
पहन केसरिया जामा। जय-जय। बजाते ढोल-दमामा ।। जय-जय ।।
नचनिया नाच दिखाते। जय-जय। मस्त हो तान लगाते ।। जय-जय ।।
गा रहे मधुर गुनीजन। जय-जय। हर रहे हैं सबके मन ।। जय-जय ।। मँगल०
ज्योतिषी भट्टजी हो, आये माथे तिलक सँवार।
पोथियाँ संगमें हो, लाये पूरन करन विचार ।।
शोध शुभ लग्नको हो, देखते सभी ग्रहोंके स्थान।
सभी ग्रह उच्चके हो, दुर्लभ देखे अचरज मान ।।
ज्योतिषी सब चकराये। जय-जय। मनहिं-मन अति हरषाये ।। जय-जय ।।
भानु नृप बोलि लिये तब। जय-जय। सुनाई गुन-गाथा सब ।। जय-जय ।।
मानवी नहीं कुँवरि यह। जय–जय। प्रेम-रस-सुधा-गन्धवह ।। जय-जय ।।
नित्य यह हरिकी प्यारी। जय-जय। नहीं तिन तें यह न्यारी ।। जय-जय ।। मँगल०
मोद भरकर हृदयमें हो, भानुने खोल दिये भंडार।
रत्न, धन, धाम, कंचन हो, लुटाये हाथों खुले उदार ।।
दूधकी तरुण गायें हो, करीं लाखों द्विजों को दान।
किया सम्मान-पूजन हो, नम्र हो, छोड़कर अभिमान।।

लुटी संपत्ति अनूठी। जय-जय। हीर के हार अँगूठी॥
जय-जय॥
भानु-मन तृप्ति न आई। जय-जय। बृत्ति दे-दे न अघाई॥
जय-जय॥
रहा अब भिक्षु न कोई। जय-जय। दरिद्रता सबकी खोई॥
जय-जय॥
मिटा सबका मँगतापन। जय-जय। हुए दाता उधार-मन॥
जय-जय। मँगल०

सुनत मङ्गल संदेश हो, बाबा नन्द उठे हरषाय।
खबर दी जाय अंदर हो, जसोदा-उर आनँद न समाय॥
सँजोये रत्न-भूषण हो, भरे शुभ वस्तुओं से थाल।
स्वर्णके, संग अपने हो, ले चलीं, सखीदल सुविशाल॥

नन्दबाबा भी आये। जय-जय। संग जसुमति को लाये॥
जय-जय॥
माट माखनके सिर धर। जय-जय। चले सँग अगणित चाकर॥
जय-जय॥
देखने लाली आई। जय-जय। मात जसुदा मन भाई॥
जय-जय॥
महलके अंदर जाकर। जय-जय। मिली कीरतिसे सादर॥
जय-जय॥ मँगल०

देखकर जसुमति रानी हो, कीर्तिदा मन अति मोद भराय।
उठा निजकर लालीको हो, दई जसुमति की गोद सुलाय॥
निरख मुखचंद्र प्रभामय हो, यशोदा आनँद-रस फूलीं।
रह गई अपलक निरखत हो, देहकी सुधि सहसा भूली॥

हुआ जब चेत, लजाई। जय-जय। कुँवरि तब हिये लगाई॥
जय-जय॥
रतन-धन किये निछावर। जय-जय। भई नहिं तृप्ति तनिकभर॥
जय-जय॥

भामती मनकी चीन्हीं। जय-जय। असीसें लाखों दीन्हीं ॥
जय-जय ॥

कीर्तिदाने सनमानी। जय-जय। यशोदा अति सुख मानी ॥
जय-जय ॥ मँगल०

नंद सँग गोप-ग्वाले हो, नाचते आये करते रंग।
छेड़ते तान टेढ़ी हो, मचाते रस्ते भर हुड़दंग ॥
भङ्गिमा करते अद्भुत हो, सभी रस-आनँद-मद-माते।
छोड़ सँकोच-संभ्रम ही, गीत सब हँसीभरे गाते ॥

आय पहुँचे बरसाने। जय-जय। लगे माखन बरसाने ॥
जय-जय ॥

लिये दधि-माखन-मटके। जय-जय। कर रहे सुन्दर लटके ॥
जय-जय ॥

बहा दी माखन-धारा। जय-जय। भरा बरसाना सारा ॥
जय-जय ॥

मिले सब ही आ-आकर। जय-जय। भये आनँदके आकर ॥
जय-जय ॥ मँगल०

मनसुखा, धनसुखा, बल हो, तोक, मधुमङ्गल, दाम, मदार।
चपलता सहज सबमें हो, कर रही थी पूरा विस्तार ॥
नन्द बाबाके ही सँग हो, आ गये थे ये बाल अनेक।
यहाँ बरसानेवाले हो मिले, हो गये तुरत ही एक ॥

हृदयमें अमित मोद भरि। जय-जय। लगे नाचन माखन सरि ॥
जय-जय ॥

नन्द वृषभानु-हाथ धर। जय-जय। नाचते लज्जा तजकर ॥
जय-जय ॥

श्वेत दाढ़ी है हिलती। जय-जय। भानु दाढ़ी से मिलती ॥
जय-जय ॥

मचा आनँद-कोलाहल। जय-जय। सिहाता देख देव-दल ॥
जय-जय ॥ मँगल०

देव-देवियाँ आ गयीं नभ में बैठि विमान।
बरसाये सुरभित सुमन आनँद-मग्न महान ॥

'भाईजी'

[६१]

(तर्ज रसिया—तीन ताल)

जो रस बरस रह्यौ बरसानें, सो रस तीन लोक में नाँहि,
तीन लोक में नाँहि, वो रस बैकुण्ठहु में नाँहि ।। जो रस
साँकरी गली बनी परबत की, दधि लै चली कुमरि कीरति की,
आगें गाय चरैं गिरिधर की, दीने सखा सिखाय ।। जो रस०
दै जा दान कुमरि ! मोहन कौं, तब छोड़ूँ तेरे गोहन कौं,
अंग सँभारन लागी तन कौं, मन में अति हरषाय ।। जो रस०
इनके संग सखीं मदमाती, उनके संग सखा उतपाती,
घेरि लईं ग्वालिन रसमाती, मन में अति हरषाय ।। जो रस०
सुरि तैंतीसन की मति बोरी, भजि के चले बिरज की ओरी,
देखि-देखि या ब्रज की खोरी, ब्रह्मादिक ललचाय ।। जो रस०
घासीराम कहै कर जोरी, चीरंजीव रहौ यह जोरी,
कृपा करैं बृषभान-किसोरी, तबहीं सब दुख जाय ।। जो रस०

[६२]

(राग कालिंगड़ा—ताल कहरवा)

बरसाने तें दौरि नारि एक नन्दभवन में आई (जू) ।
आज सखी मंगल में मँगल कीरति कन्या जाई (जू) ।।
सुनि जसुमति-मन हरष भयौ अति, बोलि लई ब्रजबाला (जू) ।
मुक्ता-मनि-माला भूषन बर पठई साज रसाला (जू) ।।
चलि गज-गामिनि साथन हाथन कंचन थार सुहाए (जू) ।
कमलनि के ऊपर खेलत मानौ अगनित चंद जु धाये (जू) ।।
डहडहे मुख छबि छाजत, राजत, लाजत कोटिक मैना ।
कंजन पर खेलत मानो खंजन, अंजन-रंजित नैना (जू) ।।
कुंडल-मंडित बने अति राजत, उपमा अधिक बिराजै (जू) ।
हार सुढार उरन पर सोहत, निरखि सची-छबि लाजै (जू) ।।
गावत गीत, करत जग पावन, भामिनि मन्दिर आई (जू) ।
नंदरायजू के आँगन में आनंद बजत बधाई (जू) ।।
देखि मुदित बृषभान भए अति, भेंट रुची सौं लीनी (जू) ।
गदगद कंठ सवन सौं बोलत, बीथिन पावन कीनी (जू) ।।
कीरति ढिंग निरखी सुठि कन्या, धन्या अधिक अपारा (जू) ।
कौतिक में कौतिक रस भीने बरषत सीसन धारा (जू) ।।
सब जग धाम, धाम पुनि जाकौं, सेष धाम जेहि मानैं ।
नंददास सुख कौं सुखसागर प्रकटी है बरसानैं ।।

[६३]

(राग बसंत—तीन ताल)

रावल राधा प्रगट भई।

अब ब्रज बसि सुख लेहु सखी री! प्रगटि कुँवरि रसमई।१।

जा निधि कौं सब चाहत हैं, सो कीरति तुमहिं दई।२।

रामदास गोकुल आयौ, जसुमति पैं बधाई लई।३।

[६४]

(राग झँझोटी—ताल दादरा)

जसुमति लैं संग नंद, छायौ मन अति अनंद,
नंदीसुर तें सुछंद बरसानैं आए।१।

लाली-मुख-इंदु बिमल निरखन हित चित्त बिकल,
ग्वार-गोपि साथ सकल, मन अति हरषाए।२।

मधुमंगल, नूनखार, रंदा, पंदा, भँगार,
मनसुख, मुनवा, मदार, कर सिंगार धाए।३।

दधि-माखन भरे माट, गोपिन सिर धरे ठाट,
माखन की मनौं हाट चली सगबगाए।४।

नाचत-गावत सलौन, बूझत नहिं कहाँ कौन,
पहुँचे बृषभान-भौन, सादर समुहाए।५।

जसुमति लै नारिवृंद, भीतर के महल-चंद,
लाली बदनारबिंद, निरखन मन भाए।६।

अंदर कीन्हौ प्रबेस, गोपी सब सुघर बेस,
कीरति कौं सुख बिसेस, नंद-घरनि आएँ।७।

लाली कौं उठाय करनि, दई अंक नंद-घरनि,
स्नेह-सुधा हिएँ भरनि, प्रेम-अश्रु आए।८।

बार-बार चूमत मुख, उभय मातु पूरति सुख,
मिटे सकल द्वंद-दुःख, निरखि सुर सिहाए।९।

'भाईजी'

[६५]

(लावनी तर्ज—ताल कहरवा)

जय राधे, जय जय राधे । जय राधे, जय जय राधे ।।
रावल में छायौ आनंद, प्रगटी राधा आनंद-कंद । जय राधे०
नंदीसुर तें आये नंद, लींन्हे सँग उपनंद, सनंद ।। जय राधे०
जसुदा मैया रोहिनि संग, दाऊ-कान्हा लियें उछंग । जय राधे०
रैंदा-पैंदा, तोक-सदाम, मधुमंगल, मनसुख, सुखराम ।। जय राधे०
दधि-माखन कौ लै उपहार, पहुँचे सब सज-सज सिंगार । जय राधे०
नृप वृषभानु मुदित भए देख स्वागत कर मन हरष बिसेष ।। जय राधे०
जसुदा-रोहिनि भीतर जाय, मिली कीर्तिदा अति हरषाय । जय राधे०
लाली कौं अति लाड़ लड़ात, जसुदा-मन नहिं मोद समात ।। जय राधे०
लाला के मुख मोद अपार, निरख करत सब जै-जैकार ।। जय राधे०

'भाईजी'

[६६]

(राग जंगला--ताल कहरवा)

त्यागमूर्ति श्रीराधा आयीं जग को त्याग सिखाने आज ।
दिव्य प्रेमका मर्म बताने प्रकट हुई लेकर सब साज ।।
कायव्यूह गोपी सब प्रकटीं, प्रकट हुए व्रजपति युवराज ।
प्रकटे वन-सुषमा, मलयानिल उद्दीपनके सभी समाज ।।
रावल ग्राम भूमि, गृह, दिन, नक्षत्र हो गये सब ही धन्य ।
मिली परमनिधि आज अलौकिक दुर्लभअद्भुत मधुर अनन्य ।।
नहीं रह गया रोग-शोक-भय-तम भ्रम-विषम अविद्याजन्य ।
परानन्द—रवि उदित देख हट गये मोह-माया—पर्जन्य ।।
नाचो, गाओ, मोद मनाओ, आज जगत् के सारे लोग ।
पाकर दिव्य 'भाव'—'रस'का अब मूर्तिमान मङ्गल-संयोग ।।
हटे सभी, मिट जायेंगे सब भव के अमित भयानक रोग ।
कर पायेंगे यदि इस मूर्त-युगलमें हम निज मन का योग ।।
सुन्दरतम सौन्दर्य, मधुरतम शुचि माधुर्य नित्य साकार ।
देख-निरख इनको भर लो नेत्रों में, मन में कर सत्कार ।।
देखो फिर भीतर-बाहर—सर्वत्र सदा इनको भर प्यार ।
करते रहो सदा हर्षित मन राधा—माधव जय-जयकार ।।

'भाईजी'

[६७]

गोकुल तें गाजत बाजत जुबतिन के जूथ लिए,
नँदरानी फूलि-फूलि रावल में आई ।।
सुनि-सुनि कें चहुं दिसि तें नारी दौरीं देखन कौं,
सबै एकसार पाय परसन कौं धाई ।।
पाछें वृषभान द्वार पौरी आए ठाड़े भए,
और बोलि जो बड़ेरी सनमुख पठाई ।।
देखत हीं नँदरानी मनहीं मन मुसिक्यानी,
आदर दें पानि गहें, भवन माझ लाई ।।
निकट जाइ लली देखि सबहिन मन अवरेखि,
अब भई साँची बात सुख-समूह ब्रज में ।।
यह सुनि जन मोहन अँग-अँग आनंद भरयौ,
गयौ जाय वृषभानजू पै लोटने पद-रज में ।।

[६८]

(राग देस—तीन ताल)

सुन्दर सुभग कुँवरि एक जाई ।
कहा कहौं यह बात रूप गुन प्रेम कोटि भरि लाई ।।
भूलि गये जित-तित सब ब्रज में सुख की लहरि बढ़ाई ।
धनि लहनो वृषभानु गोप को, भाग्य दसा चलि आई ।।
धनि आनंद जसोदा रानी अपनें भवनहिं लाई ।
वृन्दावन में सखि यह प्यारी भाग अधिक सुख पाई ।।

'भाईजी'

[६९]

(राग खमाच—ताल दादरा)

सुभ निसान बाजत वृषभान-भौन आज री ।
प्रगटी रूप-भरी कुँवरि साँवर-सुख साज री ।।
सुंदरि सब गात चलीं, सरस मधुर गीत री ।
सजे सब मंगल-कलस, हिए भरी प्रीति री ।।
कहत एक—'ह्वै हैं बस याके नँदलाल री ।
दैहैं निज प्रियतम कौं परम सुख बिसाल री ।।'
'धन्य भाग्य हमरौ' एक कहत हँसि बाम री ।
'हमहू सुख दरस-परस पैहैं अभिराम री ।।'
दधि-माखन भरे माट सीसन धरि गोप री ।
आवत सब गोरस बरसावत अति ओप री ।।
सिव, बिधि, सुरराज, सनक, नारदादि संत री ।
आए सब गुप्त, करत कीरति हियवंत री ।।

'भाईजी'

[७०]

(लावनी तर्ज—ताल कहरवा)

हरि प्रिय भामिनि, अग-जग-स्वामिनि, तन दुति-दामिनि श्रीराधा।
त्रिभुवन-पावनि, सोक-नसावनि, हरनि सकल विधि भव-बाधा॥
प्रगटी रससाने श्रीवरसानें, भानु-कीर्तिदा-घर सुघरी।
सब धन्य भए, सब भए प्रफुल्लित; मिटी बिथा सब की सगरी॥
श्रीरास-रसेस्वरि सुंदरता-मधुरता-ईस्वरी, हरि-प्यारी।
आए दरसन हित सिव, मुनि नारद, सनक आदि रिषि व्रतधारी॥
सब भए कृतारथ कर दरसन-परसन मन सब के अनुरागे।
वृषभानु-कीर्तिदा की, बरसाने की जय-जयति करन लागे॥

'भाईजी'

[७१]

(राग झँझोटी—ताल दादरा)

आए मुनि भानु-भौन नारद बरसानें।
गावत हरिनाम मधुर पावन रस-साने॥
मिले वृषभान आय बोले मृदु बानी।
'हरिपुर तैं आए हम सुनि कैं, सुखदानी—॥
प्रगट भई कीरति-कूख कुँवरी श्रीराधा।
पूरन सब आस, हरन त्रास, सकल बाधा॥
दरस करवाऔ हमैं कुँवरी के अबहीं।'
दीने पठाय भानु भीतर महल तबहीं॥
देखत ही भए मगन, तन-मन सब भूले।
महा आनंद-रस छायौ, हिए फूले॥
भाँति-भाँति करे स्तवन, फेरी तब दीनी।
चरन-रेनु कुँवरी की सिर चढ़ाय लीनी॥
बाहिर आय बोले—'वृषभानू बड़भागी!
तुम पै दुरलभ अपार कुँवरि-कृपा जागी॥
प्रगट भई आय घर तुम्हरे जो स्वामिनि।
सच्चिदानंदमई ह्लादिनि हरि-भामिनि॥'
मृदुल सुर बजाय बीन, मधुर-मधुर गावन।
लगे रस-भरे दृगन आँसू ढरकावन॥
सरस रस-प्रमत्त फेर नृत्य करन लागे।
बोले—'मैं धन्य आज, भाग्य भव्य जागे॥'

'भाईजी'

[७२]

(राग कालिंगड़ा -- तीन ताल)

ढाढ़िन नंदीसुर तें आई।
अपने पति कौं संग लिएँ है, अति आतुर उठि धाई॥
उदै देखि ब्रज वल्लभ-कुल कौ, फूली अँग न समाई।
नाचत - गावत प्रमुदित ह्वै कैं, टेरि असीस सुनाई॥
महाभाग्य कीरत्ति आदर दै भीतर भवन बुलाई।
कंचन वहु भूषन पाटंवर नख सिख तैं पहराई॥
रतनभान रतनन की पोहोंची, ढाढ़िन हाथ गहाई।
उदैभान सोने के टोडर देत वहुत सुख पाई॥
दिये खता अगनित धानन के, ललितभान जु लुटाई।
अष्टभान अरु कंतभानजू गोधन ठाठ वताई॥
महाराज वृषभान वहुत करि मन की आस पुजाई।
दासकिसोरी कौं वाँह पकरि कैं वरसाने जो बसाई॥

[७३]

(राग देस -- तीन ताल)

महरि जू जाचन तुम पै आयौ।
देहु वधाई मन की भाई, तिहूँ लोक जस छायौ॥
कीर्ति-कूखि प्रगटी श्रीराधा सुनि-सुनि मंगल गायौ।
कृष्नदास ढाढ़ी अपने कौं वहुत भाँति पहरायौ॥

[७४]

(राग गौरी -- तीन ताल)

कीरति जू, दीजै मोहि वधाई।
कीरति - कूखि सिरोमनि प्रगटी, कीरति सव जग छाई।
नंदनँदन की जोरी प्रगटी श्रीराधा सुखदाई।
अव तौ मन कौ भायौ भयौ है, विधना भली वनाई॥
हौं ढाढ़ी नृप नंद महर कौ आयौ तुम पैं धाई।
कृष्नदास पहरायौ विधि करि, फूल्यौ अँग न समाई॥

[७५]

(तर्ज रसिया -- तीन ताल)

अब जो हरष भयो रावल में, याकी तुलना कितहूँ नाहिं।
तुलना कितहूँ नाहिं, याकी समता कितहूँ नाहिं
अब जो०

बहुत पुरानौ घर कौ ढाढ़ी, पके केस, यह लंबी दाढ़ी।
कुँअरि - जनम सुनि मुदिता बाढ़ी, धायौ लै परिवार॥
अब जो०

संग डोकरि आई चलकै, हरष भरी हिय नाचै - मुलकै।
बूढ़ी देह जवानी छलकै, छायौ मोद अपार॥
अब जो०

छोरा - छोरि, बहू - बहुरिया, गायँ असीसैं मधुर सुरैया।
लाख - लाख जुग जियौ कुँअरिया, मिलै स्याम भरतार॥
अब जो०

आज जो मिलैंगे साल - दुसाला, हीरा - पन्ना, मुकता-माला।
सोने के जेवर झलकाला, हाथ पाँव पुरवार॥
अब जो०

भई आज सब की मनभाई, छोटे - मोटे लोग - लुगाई।
बगदैंगे तन खूब सजाई, लै रतनन के भार॥
अब जो०

जय - जय नृप वृषभानू दानी, जय उदार - मति कीरति रानी।
जय - जय अखिल विस्व सुखदानी! मिलै मान सरकार॥
अब जो०

'भाईजी'

[७६]

(राग जैतश्री -- ताल कहरवा)

नाचत - गावत ढाढ़िन के सँग ढाढ़ी हुरुक बजावै।
सात साखि वृषभान राय की नंदराय माथो नावै॥
गोपिन लै सँग महरि जसोदा आपुनु मंगल गावै।
ब्रजवासी उपनंद मिले सब, घर - घर बात लुटावै।
बरसाने में घर - घर कौतिक, मोतिन चोक पुरावै।
ह्वै है सब मेरे मन भायौ, कुलदेवता मनावै॥
मनि - मुक्ता रतननि भरि थारन ढाढ़ी - गोद भरावै।
झगा, पगा, उपरैना टोडर ढाढ़ी कूँ पहरावै॥
देत असीस हाथ ऊँचे करि ज्यौं सबहिन मन भावै।
सुता तिहारी, पूत नँद कौ, विधना बात बनावै॥
ऐसी सुनियत, सब काहू के जाएँ जाचक आवै।
यह कन्या कुल - मंडन जोई ब्यास - बचन मोहि भावै॥

[७७]

(राग मारू—ताल कहरवा)

हौं ढाढ़िन ब्रजरानीजू की, कीरति जाचन आई।
भवन प्रकास करन कन्या वृषभान नृपति कें जाई॥
मम पति हरषे और देव सब, उर आनँद न समाई।
उमड़े सव जाचक त्रिभुवन के, सुनि यह सुजस वधाई॥
कीजै मोहि अजाचक रानी! जाचक अनत न जाई।
दीजै रतन, मनि, मानिक, मुक्ता, नग निरमोल मगाई॥
जो दीजै तौ सात साख कौ दोऊ बंस बखानौं।
नंदराय-वृषभान नृपति को कुल-परिपाटी जानौं।
वंस अहीर महा वहु नृप भये, कंजभान कौं गाऊँ।
भुजवल, चित्रसेन, अजमीढ़े, जस पर्जन्य सुनाऊँ।
वड़े भाग्य कुल-तिलक नंदजू जा कुल कीरति भाई।
तिहिं फल सुभग स्याम घन सुंदर मंगल मोद निकाई॥
अब सुनि गोपवंस-कुल रानी! सर्वोपरि रजधानी।
अष्ट सिद्धि नवनिधि जोरें कर, कमला-सी ललचानी॥
भए रतिभानजु, सकलभान नृप, चित्रभान सुखदाई।
भान अष्टमें जोतभान वड़े, कंजभान वड़ राई॥
वड़ौ वंस वरनन कौ, लघु मति, कीरति जाति न जानी।
ता कुल श्रीवृषभान नृपति की कन्या व्यास वखानो॥

[७८]

(राग भैरव-तीन ताल)

जदुवंसी जिजमान, तिहारौ ढाढी आयौ हो।
कुँवरि-जनम सुनि कै हौं आयौ, राखि हमारो मान॥
एक बार हौं पहलें आयौ, देन वधाई ताकी।
नंदीसुर ब्रजराज-घरनि-घर, कूख सिरानी जाकी।
अब तौ मेरे मन कौ भायौ दोऊ नेग चुकावौ॥
नँदरानी, कीरतिदे रानी ढाढ़िन कौं पहिरावौ।
वहुत भाँति ढाढ़िन पहिराई गोपराय वड़ दानी॥
दासकिसोरी कौं निरभै करि कैं राख्यौ ब्रज ब्रजरानी॥

सौभाग्य-वर्णन

[७६]

(राग आसावरी—तीन ताल)

धनि तेरी माता, जिनि तू जाई ॥
व्रजनरेस वृषभानु धन्य, जिहिं नागरि कुँवरि खिलाई ।
धनि श्रीदामा भैया तेरौ, कहत छबीली बाई ॥
धनि बरसानौ हरिपुरहू तें जाकी बहुत बड़ाई ।
धन्य स्याम बड़भागी तेरौ नागर कुँवर सदाई ॥
धन्य कुंज सुखपुंजनि बरसत तामैं तू सुखदाई ।
धन्य पुहुमि, साखा-द्रुम-पल्लव जिनकी सेज बनाई ॥
धन्य कल्पतरु, बंसीबट धनि, वर बिहार रह्यो छाई ।
धन्य जमुन, जाकौ जल निरमल अँचवत सदा अघाई ॥
धन्य रास की धरनी, जहँ तूँ रुचि कै सदा नचाई ।
धनि बंसीवट, जगत-प्रसंसी, राधा-नाम रटाई ॥
धन्य सखी ललितादिक, निसिदिन निरखत केलि सुहाई ।
धन्य अनन्य व्यास की रसना, जेहिं रस-कीच मचाई ॥

[८०]

(राग भैरव—तीन ताल)

जयति जय श्रीवृषभानुदुलारी ॥
जयति कीर्तिदा जननी, जाई जिन गुन-खानि राधिका प्यारी ।
जय वृषभानु महीप-मुकुट-मनि, जिन घर जनमी जग-उजियारी ॥
कृष्णा, कृष्ण-जीवना, कृष्णाकर्षिनि कृष्ण-प्रान-आधारी ।
परम प्रेम प्रतिमा परिपूरन, प्रिय-सुख अति सुख माननिहारी ॥
प्रिय सुख-समैं परम चतुरा नित, निज सुख समैं सुभोरी-भारी ।
प्रिय-सुख लागि बिसरि सब अग-जग, सहति समोद प्रसंसा-गारी ॥
टेक-विवेक एक प्रियतम सौं, सब के सब संबंध निवारी ।
भजत-भजत भजनीय भई अब, तुम्हारौ भजन करत, कंसारी ॥
'भाईजी'

[८१]

(राग परज--तीन ताल)

धनि-धनि ब्रज बरसानौ गाम। जहाँ प्रगटी श्रीराधा नाम॥
जहाँ बसे राजा बृषभान। नंदराय के जीवन-प्रान॥
जाके घर कीरति श्रीरानी। ब्रज-बनिता की अति मनमानी॥
तिन कें उदर भई सुकुँवारी। सकल कला-गुन गति अति भारी॥
अति आनंद भयौ तिहिं काल। आइ जुरीं सब ब्रज की बाल॥
मंगल कलस बिराजत द्वार। गावति कर लै आईं थार॥
घर-घर बंदनवार बँधाई। सब मिलि आनँद करत बधाई॥
पंच सब्द बाजत हैं आँगन। बिप्र आदि आए सब माँगन॥
देत दान बृषभानु उदार। भूषन बसन अनूपम हार॥
छिरकत दूध दही अति रोरी। एक-एक काढ़ी रस बोरी॥
जानत नाहीं कछू मगन मन। भूषन-बसन-सँभार नहीं तन॥
सबै असीस देति मुख देखत। फिरि-फिरि श्रीराधा तन पेखत॥
चिरजीयौ अब ये सुकुँवारी। जाके दूलह श्रीगिरिधारी॥
नंद गोप के अति बड़ भाग। या कें राधा सौं अनुराग॥
इहि बिधि आनँद-सरिता बही। कुँवरि-कृपा तैं ते सब लही॥
बहुत भाँति यह लीला गाई। 'गोबिंद' तहाँ निछावर पाई॥

[८२]

(राग कालिंगड़ा--तीन ताल)

धन्य-धन्य द्वापर जुग, धनि यह भादौं की आठैं अति पावनि।
प्रगटे पहली में मोहन, या दूजी में राधा मनभावनि॥
उजियारौ पखवारौ पावन, भाग्यसील सुभ समय दुपहरी।
प्रगट भई राधा मनमोहन आनँदघन की आनँद-लहरी॥
पुन्य थली बरसानौ नगरी, भाग्यवान बृषभान सुनरपति।
कीरति रानी अति सुभागिनी, जिन में प्रगटी स्वयं स्याम-रति॥
भाग्यवान वे स्याम सलोने, जिन पाई यह दुर्लभ संपति।
हम सब भाग्यवान नर-नारी, भए धन्य करि तिन की सुस्मृति॥

—'भाईजी'

पलना-झूलन

[८३]

(राग बिलावल -- तीन ताल)

अहो मेरी लाड़िली सुकुमारि पालनें झूलै।
मृदु मुसकानि निरखि नैननि सुख, कीरतिजू मन-ही-मन फूलैं॥
कबहूँ चटकोरी चटकावति, झुंझन झुंझना झूलन झूलैं।
कबहुँक लेत उछंग भरि, अंतरगत की हरति है सूलैं॥
श्रीवृषभानु गोद लै बैठे, मन-क्रम-वचन साधना तूलैं।
'सूरदास मदनमोहन' के अंतरनिधि की खानि सो खूलैं॥

[८४]

(राग रामकली – तीन ताल)

लडैती पालनें झूलै।
रंगमहल रुचि रच्यौ विधाता, निरखि-निरखि मन फूलै॥
नव निधि सिधि जाको आग्याकारी, (सो) जाई कीरति बाल।
सरस सरोवर भान-भवन में, प्रगटी है कुलपाल॥
आज उदय सब ब्रजमंडल कौ, गोरी रसिक गोपाल।
कृष्नदास प्रभु अति आनंदे, जोरी परम रसाल॥

[८५]

(राग पीलू – तीन ताल)

रसिकनी राधा पलना झूलैं।
देखि देखि गोपीजन फूलैं॥
रतन जटित कौ पलना सोहै। निरखि-निरखि जननी-मन मोहै॥
सोभा की सागर सुकुमारी। उमा-रमा-रति वारैं डारी॥
डोरी ऐंचत भौंह मरोरैं। वार-वार कुँवरि तृन तोरैं॥
तिहिं छिन की सोभा कछु न्यारी। अखिल भुवनपति हाथ सँवारी॥
मुख पर अंबर वारति मैया। आनंद भयौ परमानँद भैया॥

[८६]

(राग मारू-- ताल कहरवा)

झूलौ-झूलौ राजकुमारि छबीली हो प्यारी।
श्रीकीरति प्रान-अधार, छबीली हो प्यारी॥
सब सुंदरता की सार छबीली हो प्यारी।
नवल कनक कौ पालनौ, प्यारी ! रतन-जटित जराइ॥
गजमोतिन के झूमका, प्यारी ! लटकत परम सुहाइ॥
आस पास झालर बनी, प्यारी ! पीत जरी की कोर।
पँचरँग फोंदा पाट के, प्यारी ! सोभित हैं चहुँ ओर॥
ऐसौ पलना, लाडली प्यारी ! तोकौं बनायौ सँवारि।
तुम झूलौ हौं झुलाऊँ, हो प्यारी ! अब किन छाँड़ो आरि॥
कबहुँ किलक हँसि-हँसि उठै प्यारी ! चितवत नैन विसाल।
जननि डीठ-डर जानि कै प्यारी ! देत चखोड़ा भाल॥
जरतारी टोपी लसै, प्यारी ! झगुली पीत सुदेस।
कँठ बघना कर पहोंचियाँ, प्यारी ! सोभित सुंदर वेस॥
माखन-मिश्री देउँगी, प्यारी ! घुटरून चलौ सुहाइ।
तेरे चरन रुनझुन करैं, प्यारी ! षटपद सुनत लजाइ॥
वह दिन कैसौ होयगौ, प्यारी ! तुतरे बैन बुलाइ।
मैया कहि टेरै तबै, प्यारी ! सरवस देउँ लुटाइ॥
मैया मनोरथ यौं करै, प्यारी ! जाकौ(श्री)कीरति नाउँ।
दीजै यह फल रसिक कौं, प्यारी ! श्रीबल्लभ गुन गाउँ॥

[८७]

(राग भैरव--तीन ताल)

कीरति रानी पालनें झुलावै।
रतन जटित कौ पलना बन्यौ है, मोतिन माल गुँथावै।
बिविध भाँति पाट की डोरी, हीरा बहुत जरावै।
गज-मोतिन के बने झूमका, पचरँग चीर बिछावै॥
नंदीसुर ते जसुमति रानी, मंगल गावत आवै।
सब सखियन मिलि पलना झुलावै, गरीबदास गुन गावै॥

श्रीराधा-स्तवन

[८८]

नवनीत-गुलाब तैं कोमल हैं, 'हठी' कंज की मंजुलता इन में।
गुललाला गुलाल प्रवाल जपा छवि, ऐसो न देखी ललाइन में॥
मुनि-मानस-मंदिर मध्य बसैं, बस होत हैं सूधे सुभाइन में।
रहु रे मन, तू चित-चाइन सौं, वृषभानु-कुमारि के पाइन में॥

[८९]

कोऊ उमाराज, रमाराज, जमाराज कोऊ,
कोऊ रामचंद सुखकंद नाम नाधे में।
कोऊ ध्यावै गनपति, फनपति, सुरपति कोऊ,
कोऊ देव ध्याय फल लेत पल आधे में॥
'हठी' की अधार निराधार की अधार तू ही,
जप-तप, जोग-जग्य--कछुवै न साधे मैं।
कटैं कोटि वाधे, मुनि धरत समाधे, ऐसे,
राधे, पद रावरे सदा ही अवराधे मैं॥

[९०]

काहू कौं सरन संभु-गिरिजा, गनेस-सेस,
काहू कौं सरन है कुवेर-ऐसे धोरी कौं।
काहू कौं सरन मच्छ-कच्छ, वलराम-राम,
काहू कौं सरन गोरी-साँवरी-सी जोरी कौ॥
काहू कौं सरन वोध, वामन, वराह, व्यास,
एही निराधार सदा रहै मति मोरी कौ।
आनँद करन विधि-वंदित चरन एक,
'हठी' को सरन वृषभानु की किसोरी कौ॥

[६१]

कोऊ धन, धाम कोऊ चाहै अभिराम, कोऊ
साहिबी सुरेस भाँति लाख लहियतु है।
कोऊ गजराज, महाराज, सुखराज कोऊ,
तीरथ - बरत - नेम अंग दहियतु है ।।
ऐसो चित चाहै, चरचा है दुनिया की 'हठी,'
चाहै हृदै एक तौन ठीक ठहियतु है।
जन रखवारी की सु प्रभु - प्रान प्यारी की,
सुकीरति - दुलारी को नजर चहियतु है ।।

[६२]

हीन हौं, अधीन हौं, तिहारौ ब्रज - साहिबनी !
हिय में मलीन, करुना की कोर ढरिए।
भारी भवसागर तें बूड़त बचावौ मोहि,
काम क्रोध लोभ मोह लागे सब अरिए ।।
बुरौ - भलौ जैसौ, तेरें द्वार पर्‌यौ हौं तौ,
मेरे गुन - औगुन तू मन में न धरिए।
कीरति - किसोरी, बृषभानु की दुहाई तोहिं,
लच्छ - लच्छ भाँति सौं 'हठी' कौ पच्छ करिए ।।

[६३]

जन - दुख - हरनी, धरनी पति ध्यावैं तोहि,
तेरी जग करनी बिधि बरनी बड़े थान की।
चिंता कैसौ घेरा मन ढेरा-सौ भ्रमत फिरै,
हृदै नहिं डेरा सुधि खान की न पान की ।।
ध्यावत बनै न मोहिं, तेरौई कहावत हौं,
'हठी' पै कृपा की कोर राखि दया - दान की।
औगुननि भरौ हौं कहत कर जोरि अब,
मेरौ पच्छ करि तू किसोरी बृषभानु की ।।

[६४]

जाकी कृपा सुक ग्यानी भए, अतिदानी औ ध्यानी भए त्रिपुरारी।
जाकी कृपा बिधि बेद रचे, भए ब्यास पुरानन के अधिकारी ।।
जाकी कृपा तें त्रिलोकी-धनी सु कहावत श्रीब्रजचंद बिहारी।
लोक-घटी तें 'हठी' को बचाउ, कृपा करि श्रीबृषभानु-दुलारी ।।

[६५]

चंद-सौ आनन, कंचन-सौ तन, हौं लखि कैं बिन मोल बिकानी।
औ अरविंद-सी आँखिन कौं 'हठी' देखत मेरियै आँखि सिरानी॥
राजति है मनमोहन के सँग, वारौं में कोटि रमा, रति बानी।
जीवनमूरि सबै ब्रज की ठकुरानी हमारी है राधिका रानी॥

[६६]

चामीकर - चौको पर चंपक - बरन 'हठी,'
अंग जु चमकैं चारु चंचला चलावतीं।
तारा - सी तरंगना - सी अतर लगावै रति,
मुकुर दिखावै विजै बीजन डुलावतीं॥
कमला करनि जोरै, बिमला सुतृन तोरै,
नवला लै मरजी कौं अरजी सुनावतीं।
सुरन को रानी, सुरपालन की रानी,
दिगपालन की रानीं द्वार मुजरा न पावतीं॥

[६७]

फटिक सिलान के महल महरानी बैठी,
सुरन की रानी जुरि आई मन - भावतीं।
कोऊ जलदानी, पानदानी, पीकदानी लिऐं,
कोऊ कर बीन लै सुहाए गीत गावतीं॥
कोऊ चौंर ढारैं चारु चाँदनी - से चौजवारे,
'हठी' लै सुगंधन सौं अलकैं बनावतीं।
मोतिन के, मनिन के, पन्नन के, प्रवालन के,
लालन के, हीरन के हार पहिनावतीं॥

[६८]

चंद की कला-सी, नवला-सी सखी संग वारौं,
रंभा, रमा, उमा, 'हठी' उपमा कौं को रही?
कीरति-किसोरी, बृषभानु की दुलारी राधा,
आली! बनमाली कौ सहज चित्त चोरही॥
भौंन तें निकसि प्यारी पाय धारे बाहिर लौं,
लाली तरवान की उमड़ि इक ओर ही।
बागर - बगर अरु डगर - डगर बर,
जगर-मगर चार्‌यो ओर दुति हो रही॥

[९९]

चाँदनी के आँगन, बिछौना नीके चाँदनी के,
चाँदनी-सी दुति, अँखियान सुख लह्यौ है।
चाँदनी-सौ चीर चारु, चाँदनी के आभूषन,
चंपक के गातन बखानौ जाकौ कह्यौ है॥
'हठी' आस-पास बैठीं सुघर-सुजान सखीं,
जिन्हें देखि रति कौ गुमान जात बह्यौ है'
राधे मुखचंद की निकाई ब्रजचंद आज,
अवनि-अकास लौं प्रकास फैलि रह्यौ है॥

[१००]

कंचन-महल-चौक, चाँदनी बिछौना तामें,
जरी कौ बितान-तान भान-जोति मंद की।
लालन की मालें, लाल सारी कोरदार अंग,
औठन की लाली जिमि लाली जीवबंद की॥
रंभा सी, रमा-सी जहाँ दासीं मैनका-सी 'हठी',
ठाढ़ी कर जोरैं तेऊ, छीनैं जोति चंद की।
गावैं वेद-वानी, चौंर ढारति भवानी, राधे
बैठी सुखदानी महारानी नंद-नंद की॥

[१०१]

चंदन लिपायौ चौक, चाँदनी-चंदोवे तामें,
चाँदनी-बिछौनाँ फैली लहर सुगंद की।
चाँदनी को साज नीकी चंद-सम चमकन,
चारयौ ओर चंदमुखी चंद-जोति मंद की॥
चाँदनी-सो चार चारु चाँदनी-सी फैली 'हठी',
चाँदनी-सी हाँसी, कै मिठाई सुधा-कंद की।
चंदन की चौकी बैठी चंदन लगाय भाल,
चंद-से बदन राधे रानी ब्रजचंद की॥

[१०२]

ध्यावत महेसहू, गनेसहू, धनेसहू,
दिनेसहू, फनेस त्यों मुनेस मन मानी हैं।
तीनों लोक जपत, त्रिताप की हरनहारि,
नवों निद्धि, सिद्धि, मुक्ति भई दरवानी हैं॥
कीरति-दुलारी सेवैं चरन विहारी धन्य,
जाकी कित्त नित्त विधि वेदन बखानी हैं।
साधा काज पल में,अराधा छिन आधा'हठी',
वाधा हरिवे कौं एक राधा महारानी हैं॥

[१०३]

बैठी रंग भरी है रँगीली रंग रावटी में
कहाँ लौं बखानौं सुंदराई सिरताज की।
चाँदनी की, चंपक की, चंचला-चमीकर की,
इंदुमा, तिलोतमा की सोभा कौन काज की॥
मोतिन के हार गरें, मोतिन सौं माँग भरें,
मोतिन सौं वेनि गुही 'हठी', सुखसाज की।
चाल गजराज, मृगराज की-सी लंक, दुज-
राज-सौ वदन राजै रानी व्रजराज की॥

[१०४]

बड़ौ ही प्रताप, बड़ौ ही सुहाग, बड़ौ ही प्रभाव सुभाविक राखैं।
वड़ी गुन-मान, वड़ीयै भुजान, सरूप-निधान पुरानन भाखैं।
बड़े-वड़े देव दिवेसन की घरनीं मुख देखन कौं अभिलाषैं।
वड़ी दिलदार, बड़े-वड़े हार, बड़े-वड़े वार, बड़ी-वड़ी आँखैं॥

[१०५]

रंभा-रमा-सी, उमा-सी, 'हठी' विमला नवला रति रूप छलो सी।
चाँदनी-चंपा-चमोकर-सी चपला चमकावत जात चली सी॥
भामन आज लखी भरि नैनन, रावरी आवत देखि भली सी।
जात चली गलि भानुलली अलि! मंजुल कोमल कंज-कली-सी॥

[१०६]

मोरपखा, गर गुंज की माल, किएँ नव भेष, बड़ी छबि छाई।
पीतपटी - दुपटी कटि में लपटी लकुटी 'हठी' मो मन भाई॥
छूटी लटैं, डुलैं कुंडल कान, बजै मुरली - धुनि मंद सुहाई।
कोटिन काम गुलाम भए, जब कान्ह ह्वै भानु - लली बनि आई॥

[१०७]

(दोहा)

कृष्णमना, श्रीकृष्ण - मति कृष्णजीवना शुद्ध।
कृष्णेन्द्रिया, सुचारु शुभ, कृष्णप्रिया विशुद्ध॥
कृष्ण-कथा मुखमें सदा, कृष्ण-नाम-गुण-गान।
कृष्ण-सुभाषण-श्रवण शुचिं, कृष्ण-गुण निरत कान॥
कृष्ण-रूप-मधु नेत्रमें, नासा कृष्ण-सुगन्ध।
कृष्ण-सुधा-रस-रसमयो रसना नित निर्बन्ध॥
कृष्ण-स्पर्श-संलग्न नित अंग विना व्यवधान।
कृष्ण-मधुर रस कर रहा मन अतृप्त नित पान॥
नित्य कराती श्यामको मधुर अमिय-रस-पान।
नित्य पूर्ण करती सभी श्याम-काम, रख ध्यान॥
श्याम-प्रेम शुचि रत्नकी अमित मनोहर खान।
श्याम-सुखकरण गुण अमित अनुपम नित्य निधान॥
भीतर-बाहर पूर्ण नित सुन्दर श्याम सुजान।
दीख रहा सब श्याममय, नित नव मधुर महान॥
विश्वविमोहन श्यामको मनमोहनि, रसधाम।
श्याम-चित्त-उन्मादिनी श्यामा दिव्य ललाम॥

'भाईजी'

[१०८]

(राग सूहा—तीन ताल)

हरत मन माधव कंचन-गोरी॥
राधा अनियारे-रतनारे लोचन सौं, कछु भौंह मरोरी।
पग-पैंजनि, दोउ चरन महावर, करधनि-धुनि मनु मधु-रस घोरी॥

दरपन कर, सोहत मुकता-मनि-हार हृदै, मृदु हँसरी ठगोरी।
नयननि वर अंजन मन-रंजन, चित्त-वित्त-हर नित बरजोरी॥
नील वसन, सरदिंदु-वदन-दुति, बेंदी सेंदुर-केसर-रोरी।
सहज मथत मन्मथ-मन्मथ-मन दिव्य छटा वृषभानुकिसोरी॥

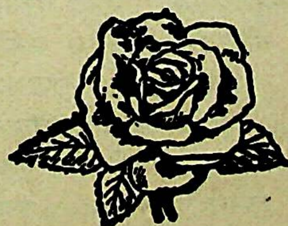
'भाईजी'

[१०६]

(राग झँझोटी—ताल दादरा)

जय जय हरि-हृदया वृषभानु-सुकुमारी॥
विजुरि बरन गौर बदन, सोहत तन नील वसन,
बिंब अधर मधुर हँसन, माधव-मन-हारी।
सुषमामय अंग-अंग लिये मधुर सखिन संग,
बिहरत भरि मन उमंग प्रियतम-सुखकारी॥
लोक-वेद-लाज त्यागि, त्यागि स्वजन महाभाग,
हरि हित गावत बिहाग, डोलत मतवारी।
प्रियतम-सुख-जल-सुमीन, निज-सुख-वांछा-विहीन,
गुननिधि, पै बनी दीन, राधिका दुलारी॥

'भाईजी'



श्रीराधा-माधव-प्रीति-सम्बन्धी स्फुट पद

[११०]

(रसिया तर्ज—ताल कहरवा)

प्रेम जौ प्रगट्यौ व्रज के वीच,
सो तो दुर्लभ है जग माय़ँ, सो तो अतुलनीय जग माय़ँ,
सो तो तीन लोक में नाय़ँ, सो तो सप्त द्वीप में नाय़ँ ॥
राधा महाभाव की मूरति, माधव रसिक-सिरोमनि रसपति,
इन की त्यागमयी उज्ज्वल रति, निगम न पायौ पार ॥
निजसुख-वाञ्छा के सुचि त्यागी, एक दूसरे के अनुरागी,
भोग-मोच्छ के सहज विरागी, महिमा अपरंपार ॥
एक दूसरे कौं सुख देवैं, निज सुख नहिं चाहैं नहिं लेवैं,
प्रियसुख लागि त्याग कों सेवैं, अहंकार कर छार ॥
प्रेम प्राप्त करिवौ जो चाहैं, भर लै हिय में अमित उमाहैं,
सुख-दुख में न हँसै न कराहै, हो पूरौ तैयार ॥
गोपीजन के त्याग-भाव कौं, प्रियतम-सुख के एक चाव कौं,
सकल वासना के अभाव कौं करैं समुद स्वीकार ॥
जीवैं-मरैं प्रेम के खातर, भोग-त्याग दोउन कौं तजकर,
प्रियतम के इच्छामय वनकर, रहैं नित्य अविकार ॥

—'भाईजी'

[१११]

(राग भीमपलासी--ताल कहरवा)

जय जय जय राधा अभिराम ।
जय जय जय माधव गुणधाम ॥
जय जय पावन नन्दग्राम ।
जय वरसाना पूरणकाम ॥
जय नँदवावा, नृप वृपभान ।
जय मनसुख, मधु सखा सुजान ॥
जय कीर्तिदा मूर्ति अनुराग ।
जयति यशोदा मा वड़भाग ॥
जय गोपीजन कायव्यूह ।
जय सखिगण मंजरी समूह ॥
जय रासेश्वरि रूप ललाम ।
जय रसिकेन्द्रशिरोमणि श्याम ॥
जय जय निभृत निकुञ्ज सुरम्य ।
जय लीला मन-वुद्धि-अगम्य ॥

'भाईजी'

[११२]

(राग भैरवी—ताल कहरवा)

छवि छाई छबीली बृंदावन में। आज खेलैं अकेले कहुँ कुंजन में॥
त्रिविध समीर पुलिन तीर चलि रही कैसी।
तरनि-तनया-तरंग संग बहि रही कैसी॥
गीत कल कंठ सौं कोयल कहि रही कैसी।
मत्त मयूर नृत्य-नृत्य लै रही कैसी॥
राधे रानी! पधारौ आज कुंजन में॥ छवि०॥
कुँवरि किसोरी भोरी भानु की दुलारी तू।
रवनि, रासेस्वरी, प्रान-धन हमारी तू॥
तोय राखौं सदा इन नैनन में॥ छवि०॥
सुमन सुगंध कुंद मंद-मंद महकाई।
पवन झकोर डार फल-भार लहराई॥
मानौ ठाड़ी बुलावै तुम्हें सैनन में॥ छवि०॥
आज रस रास सुख लूटि सखी हरषैंगी।
रूप को रासे राधे देखि रंग बरषैंगी॥
मीठी तान सुनाय मृदु बैनन में॥ छवि०॥

[११३]

(राग भैरवी—ताल कहरवा)

चलौ, चलौ री किसोरी बृंदावन में।
कैसी छाई हरियाली आज कुंजन में॥
सीतल मंद सुगंध जुत चलि रहि त्रिविध समीर।
तुमहु पधारौ, रास करि हरिऐ जन-मन-पीर॥
प्रेमबावरे बने री तेरे दरसन में॥ चलौ०॥
चमकि चंद की चाँदनी मो मन रही लुभाय।
मति देखौ या चंद कौं, देय न दीठि लगाय॥
आज दियौ ना डिठौना गोरे आननमें॥चलौ०॥
सुक-पिक-खंजन द्रुमन चढ़ि चह के रहे हरषाय॥
मनहुँ रास-रस निरखिवे प्रेमी रहे तुराय॥
प्रेम बावरे बनेंगे तेरे दरसन में॥चलौ०॥

तुम भोरे,अति सरल चित, ये व्रजतिय सब ढीट ।
तबही तौ नित मान करि दै बैठत हौ पीठ ॥
नित कैसैं मनाऊँ परि चरनन में ॥ चलौ० ॥
करन लगे फिरि अचगरी, बोलत कुटिल सुभाय ।
तेरी कुटिल कटाच्छ लखि को न जाय बौराय ॥
कैसौ भरयौ है मिठास इन वैनन में ॥ चलो० ॥
ये पपिहा पिउ-पिउ रटत, मो मन करत उदास ।
ह्वै अधीन मागत मनौ वृंदावन कौ वास ॥
कब परैगी पुकार तेरे स्रवनन में ॥ चलो० ॥
मोहि लजावत वृथा हरि ! तुम रस प्रेमी भृंग ।
'स्याम' करत विनती रहै, अनुदिन राखौ संग ॥
मेरौ जनम सुफल पग-परसन में ॥ चलो० ॥

[११४]

(तर्ज रसिया—तीन ताल)

रटे जा राधे - राधे, जपे जा राधे-राधे ।
प्यारे व्रजराजकुमार, भजे जा राधे-राधे ॥ टेक ॥
या व्रजकी महिमा भारी, नहिं जानै अज-त्रिपुरारी,
जहँ प्रगटे नंदकुमार, रटे जा राधे - राधे ॥ १ ॥
जहँ रोहिनि - जसुमति मैया, दाऊ-से नेही भैया,
नँदबाबा करै दुलार, भजे जा राधे-राधे ॥ २ ॥
जहँ अगनित सखा पियारे, खेलैं रँग न्यारे-न्यारे,
गैयन के झुंड अपार, जपे जा राधे-राधे ॥ ३ ॥
अति नगर सुघर बरसानौ, माँ कीरति, पितु वृषभानौ;
प्रगटी राधा सुखसार, रटे जा राधे-राधे ॥ ४ ॥
आनँदघनरासी राधे, राधे बिन मोहन आधे,
राधा ही जीवन-सार, भजे जा राधे-राधे ॥ ५ ॥
है राधा माधव-आत्मा, राधा-बल हरि सर्वात्मा,
है महाशक्ति अनिवार, जपे जा राधे-राधे ॥ ६ ॥

है महाभावमयि राधा, प्रेमानँद-उदधि अगाधा,
राधा सँग नित्य विहार, रटे जा राधे-राधे ॥ ७ ॥
जग रागरहित, अति रागी, गोपीजन अति बड़भागी,
जिन पायौ प्रभु कौ प्यार, भजे जा राधे-राधे ॥ ८ ॥
गोपिन महँ सब सिरमौर, मुनि-मन-हरकी चित-चोर,
राधा की हूँ बलिहार, जपे जा राधे-राधे ॥ ९ ॥
राधा की रसमयि लीला, कोउ समुझै रसिक हठीला,
जाकौ वेद न पायौ पार, रटे जा राधे राधे ॥ १० ॥

'भाईजी'

[११५]

(राग बिलावल—ताल दादरा)

या दधि कौ कान्हा दान न पैहौं।
सँग की सखीं सब आगे निकसि गईं
मोते अकेली ते का लै पैहौ ॥ या दधि कौ० ॥
अंबर बेचौ, पीतांबर बेचौं
मुरली के सँग कान्हा खुद बिक जैहौ ॥ या दधि कौ० ॥
जो मेरा मटुकी पै हाथ लगैहौ,
तो माँग भरे मोती गिर जैहैं।
इक मोती के मोल में कान्हा!
नंद जसोदा के सँग बिक जैहौ ॥ या दधि कौ० ॥

[११६]

(राग बिलास टोड़ी—तीन ताल)

कृपा जो राधाजू की चहियै।
तो राधावर की सेवा में तन-मन सदा उमहियै ॥
माधव को सुख मूल राधिका, तिन के अनुगत रहियै।
तिन के सुख-संपादन कौ पथ सूधौ अविरत गहियै ॥
राधा-पद-सरोज-सेवा में चित निज नित अरुझइयै।
या विधि स्याम-सुखद राधा-सेवा सौं स्याम रिझइयै ॥
रीझत स्याम राधिका रानी की अनुकंपा पइयै।
निभृत निकुंज जुगल सेवा कौ सरस सुअवसर लहियै ॥

'भाईजी'

श्रीराधाकुमारीकी आरती

(राग बहार—तीन ताल)

आरति श्रीवृषभानुसुताकी ।
मंजु मूर्ति मोहन-ममताकी ॥ टेक ॥

त्रिविध तापयुत संसृति-नाशिनि,
विमल विवेक विराग विकासिनि,
पावन प्रभु-पद-प्रीति प्रकाशिनि,
सुन्दर-तम छवि सुन्दरताकी ॥ १ ॥

मुनि-मन-मोहन मोहन-मोहनि,
मधुर मनोहर मूरति सोहनि,
अविरल प्रेम-अमिय-रस दोहनि,
प्रिय अति सदा सखी ललिताकी ॥ २ ॥

संतत सेव्य संत-मुनि-जनकी,
आकर अमित दिव्य गुन-गनकी,
आकर्षिणी कृष्ण-तन-मनकी,
अति अमूल्य सम्पति समताकी ॥ ३ ॥

कृष्णात्मिका कृष्ण-सहचारिणि,
चिन्मय वृन्दा-विपिन-विहारिणि,
जगजननि जग-दुःख-निवारिणि,
आदि अनादि शक्ति विभुताकी ॥ ४ ॥

'भाईजी'





श्रीराधाजी भगवान् श्रीकृष्णकी ही अभिन्न मूर्ति हैं। इनकी पूजा सदासे होती आयी है और होनी चाहिये। भारतके जन-जनको चाहिये कि वह सर्वत्र श्रीराधाजन्माष्टमी-व्रत करने तथा महोत्सव मनानेका सत्प्रयास करे। शुद्ध हृदयसे उत्साहपूर्वक स्वयं मनावे तथा लोगोंको प्रेरणा देकर मनवावे। इसमें उसका और जगत्के जीवोंका, जो इस व्रत-महोत्सवका सेवन करेंगे, कल्याण होगा। इसमें कोई भी संदेह नहीं है।

—नित्यलीलालीन परमपूज्य
भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार